ओ३म्

सत्यार्थ - सन्देश

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ६

वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में आई फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की सबने मन में ठानी थी।
चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।। ....

कुटियों में भी विषम वेदना, महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुंधूपंत पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रण-चण्डी का कर दिया प्रकट आहवान।
हुआ यज्ञ प्रारम्भ उन्हें तो सोई ज्योति जगानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।। .....

जाओ रानी याद रखेंगे ये कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनासी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी।
तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमिट निशानी थी,
बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।।

रचनाकार- सुभद्रा कुमारी चौहान

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

सत्यार्थ - सन्देश

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ-सन्देश

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

संपादक

अशोक आर्य

कम्पयूटर एवं ग्राफिक्स

संदीप यादव

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११३
आषाढ़ कृष्ण तृतीया
विक्रम संवत्
२०६९
दयानन्दाब्द
१८९

सत्यार्थ-सन्देश में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

गोवंश वध-राष्ट्र हानि

१७

२८ रानी लक्ष्मीबाई

१४ अनिवार्य शिक्षा

३० मधुर याद बचपन की

२६ जी.बी. रानी

समाचार २४

२५ हलचल

०४	वेद सुधा
१०	यथायोग्य व्यवहार
१२	वेदों में काव्य सौन्दर्य एवं ललित कलाएँ
२१	गृहस्थ और नारी महिमा
२२	गर्मी की सौगात-तरबूज
२३	बाल वाटिका

स्वामी एवं प्रकाशक "श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास" उदयपुर

मुद्रक : चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.), उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४ , ९३१४५३५३७९, ९८२८९२९७४७
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail-com,

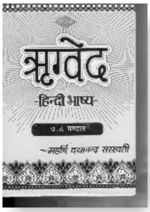

ओ३म्

वेद सुधा

विश्वदानीं सुमनसः स्याम पश्येम नु सूर्यमुच्चरन्तम्।
तथा करद्वसुपतिर्वसूनां देवाँ ओहानोऽवसागमिष्ठः।। -ऋ. ६.५२.५

हम सदा 'सुमन' बने रहकर उदित होते सूर्य के दर्शन करते रहें। समस्त ऐश्वर्य का स्वामी वह (भगवान) हमें ऐसा बना दे कि हम दिव्य गुणों का दर्शन करते रहें प्रसिद्ध फ्रेंच लेखक रोमाँ रोला ने स्वामी विवेकानन्द का दिव्य चरित्र लिखा है। उसे जब वैज्ञानिक आईंस्टीन ने पढ़ा तब उसने रोमाँ रोला को पत्र लिखा-

''इस पुस्तक को पढ़कर मुझे ऐसा लगा जैसे कैदखाने की अँधेरी कोठरी की दीवारें अचानक ढह गईं और सूरज की किरणें, कैदी को प्रकाश की बौछार से स्नान कराने लगीं।''

इस ग्रन्थ में रोमाँ रोला ने भारतीय-जीवन दर्शन का आभास देने के लिए स्वामी विवेकानन्द द्वारा उद्धृत दो मन्त्रों का बार-बार उल्लेख किया है और उन्हें भारतीय जीवनचर्या का ध्येय बताया है। इन दो मन्त्रों में एक ऋग्वेद का उपर्युक्त **'विश्वदानीं सुमनसः स्याम'** मन्त्र है। इस मन्त्र में नित्य नये उल्लास के साथ जीवन के प्रत्येक प्रभात के स्वागत की प्रेरणा है। दुनिया की प्रत्येक संस्कृति चाहे वह कितनी ही उन्नत क्यों न हो जीवन को उल्लास नहीं मानती, संघर्ष या पापों से लड़ने का कार्यक्षेत्र मानती है। केवल वैदिक संस्कृति ही जीवन को लीला या आनन्द का स्रोत मानती है। महर्षि रमण का कथन है-

''आनन्द के लिए जो संघर्ष होगा वह भी संघर्षरूप न होकर प्रेम या आनन्दरूप ही होगा।''

मन्त्र में 'सुमन' शब्द बड़ा सार्थक है। 'सुमन', अर्थात् मन की सुन्दरता और स्वच्छता अथवा 'सुमन' का तात्पर्य है- पुष्प की भाँति सुगन्धित एवं समर्पित जीवन।

प्रथम 'सुमन' के द्वितीय रूप की चर्चा करें।

प्रभु के द्वार पर भक्त शीश टेके पड़ा है, परन्तु उसका जीवन यदि 'सुमन' (पुष्प) नहीं बन सका, अहम् और वैर-विरोध की भावनाओं से ही वह घिरा रहा तो कैसे दर्शन होंगे अपने प्यारे प्रियतम प्रभु के? अतः वेदवाणी उसे सदा, सर्वदा प्रत्येक परिस्थिति में 'सुमन' बने रहने का सन्देश देती है।

'सुमन', अर्थात् प्रभु-चरणों में पूर्णतः समर्पित जीवन। न अपनी कोई पृथक् इच्छा है न कामना। 'उस' की इच्छा में ही अपनी सभी इच्छाएँ सम्मिलित हैं। वह जैसा रक्खे, जहाँ रक्खे,जो दे या न दे- उसी में प्रसन्नता है। प्रसन्नता ही नहीं उसके लिए हदय से सच्चा धन्यवाद निकल रहा है-

राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रज़ा है।

ऋषि दयानन्द 'प्रार्थनायाचनासमर्पण' विषयान्तर्गत 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में लिखते हैं-

''इस प्रकार से जो मनुष्य अपनी सब चीज़ें परमेश्वर के अर्थ समर्पित कर देता है उसके लिए परम कारुणिक परमात्मा सब सुख देता है, इसमें सन्देह नही।''

यह समर्पणभाव 'सुमन' का जीवन-सन्देश है। एक भारतीय आत्मा (माखनलाल चतुर्वेदी) के शब्दों में-

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ। चाह नहीं प्रेमीमाला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं सम्राटों के शव पर हे हरि! डाला जाऊँ। चाह नहीं देवों के सिर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना बनमाली उस पथ पर तुम देना फेंक। मातृभूमि हित शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।।

-'पुष्प की अभिलाषा'

सुमन का सन्देश है- परोपकार, विपत्ति में अविचल भाव, शत्रु मित्र दोनों के प्रति समता और सर्वस्व दान। कवि के शब्दों में-

जीवन बन तू फूल समान,
पर-उपकार सुरभि से सुरभित, सन्तन को सुखदान।
कठिन कण्टकों के घेरे में, दारुण दुःखदायी फेरे में।
पड़कर विचलित कभी न होना, बनना नहीं अजान।
शत्रु-मित्र दोनों का हित हो, पावन यह तेरा शुभव्रत हो।
मधुदाता बन सबका प्यारा, तजकर भेद विधान।
दे तू सुरभि टूटने पर भी, पैरों तले रौंदने पर भी।
इस विधि से प्रभु की माला में पा ले-प्यारा स्थान।
जीवन बन तू फूल समान।।

मन का महत्त्व- 'सुमन' का दूसरा अर्थ है- सु+मन, अर्थात् सुन्दर, स्वच्छ, निर्मल मन। बालकों की तरह भोलापन। यह मन ही मनुष्यों के बन्धन और मोक्ष का कारण है-

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।

अथर्ववेद के एक मन्त्र में मन से घोर अशान्ति और इसी से सच्चे सुख और शान्ति-प्राप्ति की बात कही है-

इमानि यानि पञ्चेन्द्रियाणि मनः षष्ठानि मे हृदि ब्रह्मणा संशितानि।
यैरेव ससृजे घोरं तैरेव शान्तिरस्तु नः।। -अथर्ववेद १९.९.५

उस ब्रह्म द्वारा ये पंचेन्द्रियाँ तथा छटा मन हृदय में इस प्रकार अवस्थित है कि जिन इन्द्रियों द्वारा घोर अशान्ति अनुभव होती है, उन्हीं के द्वारा मुझे शान्ति प्राप्त हो।

'सुमन'-कुछ विशेषताएँ तथा आवश्यकताएँ

१. शान्ति- मानसिक शान्ति प्रभु कृपा का प्रथम वरदान है। जब तक यह मन उस 'द्वार' तक नहीं पहुँचता तब तक विविध कामनाओं, विषय-वासनाओं और संकल्प-विकल्पों में भटकता और अशान्त बना रहता है, किन्तु-

जदि विषै पियारो प्रीति सूँ, तब अंतरि हरि नांहि
जब अंतर हरिजी बसै तब बिषिया सूँ चित नांहि। कबीर (साध साषीभूत कौ अङ्ग)

हरि का अनुभव होते ही विषय-वासनाएँ मन को अशान्त नहीं बनातीं। यह शान्ति विरलों को ही प्राप्त है। महात्मा आनन्द स्वामी का अनुभव है-

''बहुधा लोग ईश्वर-कृपा को माया के नाप-तोल से मापते हैं। कोई सौन्दर्य का नमूना हुआ, कोई धन का भण्डार हुआ, किसी के यश-कीर्ति की पतंग आकाश पर चढ़ गई तो यह कहा जाता है कि इस पर प्रभु की कृपा है, परन्तु इन पदार्थों को प्रभु-कृपा समझना भारी भूल है। ये सारे पदार्थ होते हुए भी यदि वह मानव मानसिक शान्ति से वंचित है तो समझो कि इस पर प्रभु-कृपा नहीं है। **मन की शान्ति तो विरले ही को मिलती है। यह भगवान की विशेष देन है। यह उसके प्यार का सबसे बड़ा निशान है।''**

२. अनन्यता- अनन्यता शान्त और स्थिर चित्त की एक विशेषता है। इसे ही योगदर्शन में 'स वस्तुदेशकालानुपाती' कहा है। वहाँ न स्थान, न काल, न पद, न आयु किसी भी विषय का विचार नहीं रहता। लम्बा समय भी छोटा अनुभव होता है। ऊँच-नीच, छोटे-बड़े, काले-गोरे किसी का ध्यान इस अवस्था में नहीं रहता। श्रीराम वन में भीलनी के कन्दमूल में और श्रीकृष्ण विदुर के यहाँ शाक-पाक में तन्मय हैं। सम्राट् अकबर के जीवन का यह प्रसंग अविस्मरणीय है-

एक बार बादशाह अकबर दिनभर यात्रा करते-करते बहुत दूर निकल गये। चलते-चलते नमाज़ का समय हो गया, अतः मार्ग में ही एक ओर नमाज़ का वस्त्र बिछा दो.ज़ानु हो गये। उधर एक नवयुवती अपने पति को खोजती आ रही थी। उसका पति सवेरे का घर से गया शाम तक भी घर नहीं लौटा था। पति-वियोग में उन्मत्त यह देवी इधर-उधर दृष्टि डालती आगे बढ़ती जा

रही थी। अपने विचार में डूबी उसने नमाज़ का कपड़ा नहीं देखा ओर उसी पर पैर रखती चली गई। अकबर को उसकी गुस्ताख़ी पर क्रोध तो आया, परन्तु चुप्पी साधे रहा। थोड़ी देर में अपने पति के साथ उसी रास्ते से वह युवती लौटी। तब अकबर कहने लगा-

'तुम्हें दिखाई नहीं दिया। मैं नमाज़ में, प्रभु-भक्ति में लीन था। तुझे नमाज़ का यह कपड़ा भी नज़र नहीं पड़ा, इस पर पग रखती चली गई।'

युवती ने बड़े धैर्य से एक दोहा पढ़ा-

नर राची सूझी नहीं तुम कत लख्यो सुजान। कुरान पढ़त बौरे भयो, नहिं राच्यो रहमान।

मैं तो नर (पति) के प्रेम में अनुरक्त थी, मुझे कुछ सूझा नहीं पर तुम तो प्रभु-भजन में लीन थे, मुझे कैसे देख लिया? ज्ञात होता है कुरान ही पढ़कर बौरा गये हो, भगवान् में अभी प्रीति नहीं हुई है।

अकबर अवाक् रह गया। कहते हैं कि वह इस दोहे को बार-बार दोहराया करता था।

३. निर्मलता- प्रभु-दर्शन यदि लक्ष्य है तो मन की निर्मलता उसका एक प्रमुख साधन है। स्वामी दर्शनानन्दजी ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ उपनिषद् प्रकाश (पृष्ठ ३६१) में लिखा है-

''मन के दोष ऐसे हैं जिनके कारण प्रभु का प्रतिबिम्ब मन में पढ़ते हुए भी दिखाई नहीं देता। मन दर्पण की भाँति है। दर्पण में यदि मल लगा हो या दर्पण चंचल हो या उस पर पर्दा या आवरण पड़ा हो तो बिम्ब सम्मुख होता हुआ भी उसका प्रतिबिम्ब दर्पण में दिखाई नहीं देगा। ठीक इसी प्रकार मन में भी उस प्रभु का प्रतिबिम्ब दिखाई नहीं देता, यदि उसमें तीन दोष हों-

१- **मल (अपवित्रता) -ये मानसिक मल क्या हैं?**

विषयेष्वतिसंरागो मानसो मलमुच्यते। तेष्वेव ह्यविरागो वै मानसी शुद्धिरुत्तम्।।

विषयों में अत्यन्त आसक्ति मन की अशुद्धि का कारण है और उन्हीं विषयों में अनासक्ति मन की निर्मलता है।

२- **विक्षेप (चंचलता)** मन का दूसरा दोष है- चंचलता, परन्तु चंचलता मन का स्वभाव है।

अभ्यास, वैराग्य तथा अन्य यौगिक उपायों द्वारा उस चंचल मन को लक्ष्य की ओर प्रवृत्त किया जाता है। अत्यधिक चंचलता का कारण मन की वासनाएँ हैं। मन में असन्तोष बना रहता है। वह दौड़ता रहता है सदा भविष्य की ओर, किन्तु क्षितिज के समान मंजिल सदा आगे-ही-आगे खिसकती जाती है। एक लक्ष्य प्राप्त हो गया तो दूसरा लक्ष्य बनाकर उसकी ओर दौड़ना प्रारम्भ कर देता है। जिसे एक हजार की चाह थी, एक हजार मिलने पर वह दो हजार की कामना करने लगता है। वह अन्तिम मंजिल कभी आती ही नहीं। आवश्यक नहीं है कि जो चाहा, वह मिल जाए। जो नहीं मिला उसमें असन्तोष बना रहता है। जितनी बड़ी आशा उतना ही बड़ा असन्तोष। धनी को पाँच लाख की हानि का असन्तोष, क्योंकि उसने आशा की थी दस लाख के लाभ की और लाभ हुआ पाँच लाख का ही, अतः उसे पाँच लाख के लाभ का आनन्द नहीं, किन्तु पाँच लाख और न मिलने का असन्तोष पीड़ित करता रहता है। इसके विपरीत प्रभु-भक्त की मनोवृत्ति होती है-

साईं इतना दीजिए जामें कुटुम समाय। मैं भी भूखा न रहूँ साधु न भूखा जाय।। -कबीर

जो मिल गया उसी में सन्तुष्ट है। उसी के लिए प्रभु को धन्यवाद दे रहा है। उस- 'दाता' के सम्मुख एक राजा भी भिक्षुक है और फकीर भी।

३- **आवरण (अहंकार का पर्दा)** मन तीसरा दोष है 'आवरण'। मन का आवरण है अंहकार। यह घुन की तरह अन्दर-ही-अन्दर मनुष्य को खाता रहता है। अंहकार के अनेक रूप और प्रकार हैं। किसी को रूप का, किसी को यौवन, विद्या, पद, धन और अधिकार का अभिमान है। किसी को कुछ न मिलने पर अंहकार बना रहता है।

भर्तृहरि लिखते हैं-

यदा किंचिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवं, तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किंचित् किञ्चिद् बुधजनसकाशादवगतं, तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः।। -नीतिशतक ७

जब अभी कुछ ही जाना था मेरा मन मदान्ध हाथी की भाँति मद-ग्रस्त हो गया और मैं समझने लगा कि मैं सब-कुछ जानता हूँ, किन्तु जब थोड़ा- थोड़ा विद्वानों का सङ्ग मिला तब अनुभव हुआ कि मैं तो मूर्ख हूँ। इस प्रकार ज्वर की भाँति मेरा अभिमान जाता रहा।

अहंकार-विनाश के अनेक उपाय शास्त्रों में वर्णित हैं। विनम्रता, स्वदोष-दर्शन से लघुता का भाव आदि से मन अंहकारी नहीं होता। इस संसार में एक से बढ़कर एक गुणी हैं, उनका सदा ध्यान करना चाहिए। प्रकाश जुगनू भी करता है, परन्तु उससे अधिक प्रकाशक तारे हैं। तारों से अधिक चन्द्रमा, चन्द्रमा से अधिक सूर्य, सूर्य से भी अधिक वह परमात्मा प्रकाश-पुञ्ज है। इस प्रकार ऊँचाई की और सदा दृष्टि रखने से मानव-मन कभी अहंकारी नहीं होता।

मानसिक निर्मलता के वैदिक उपाय

वैदिक साहित्य में मानसिक मल-शोधन के तीन उपायों को प्रमुखता दी गई है-

१.शुद्ध अन्न- छान्दोग्य उपनिषद् में मन के तात्त्विक विवेचन में उपनिषत्कार कहते हैं-

अन्नमशितं त्रेधा विधीयते तस्य यः स्थविष्ठो धातुस्तत्पुरीषं भवति
यो मध्यमस्तन्मांसं योऽणिष्ठस्तन्मनः। अन्नमयं हि सोम्य! मनः.....। -छान्दोग्यपनिषद् ६.५.१,४

खाया हुआ अन्न तीन प्रकार का हो जाता है। उसका जो अत्यन्त स्थूल भाग होता है वह मल हो जाता है, जो मध्य भाग है वह मांस हो जाता है और जो अत्यन्त सूक्ष्म भाग है, वह मन हो जाता है। हे सोम्य! यह मन अन्नमय है।

इसी उपनिषद् में अन्यत्र उदाहरणपूर्वक स्पष्ट करते हुए ऋषि आरुणि अपने पुत्र श्वेतकेतु से कहते हैं-

दध्नः सोम्य! मथ्यमानस्य योऽणिमा स ऊर्ध्वः समुदीषति तत्सर्पिर्भवति।
एवमेव खलु सोम्यान्नस्याश्यमानस्य योऽणिमा स ऊर्ध्वः समुदीषति तन्मनो भवति। -छान्दोग्योपनिषद् ६.६.१-२

हे सोम्य! मथे जाते हुए दही का जो सूक्ष्मांश होता है वह इकट्ठा होकर नवनीतरूप से ऊपर आ जाता है। वह घृत होता है। इसी प्रकार हे! सोम्य! खाए हुए अन्न का जो सूक्ष्म अंश होता है वह सम्यक् प्रकार से ऊपर आ जाता है, वह मन होता है।

मानसिक निर्माण की यह प्रक्रिया जितनी मनोवैज्ञानिक है उतनी ही प्रेरक भी है। इसके अनुसार शरीर अन्न के स्थूलभाग का और मन सूक्ष्म भाग का विपरिणाम है, अतः जिस भावना अथवा साधन से अन्न (वित्त) कमाया जाता है उसका सूक्ष्म प्रभाव मन पर अवश्य पड़ेगा। **यदि अन्न कमाने में झूठ, दम्भ, मक्कारी या पर-पीड़ा को काम में लाया गया है तो उसको खानेवाले के मन पर वैसा ही प्रभाव पड़ेगा।** यह प्रभाव जाग्रत् होकर मनुष्य को वैसे ही कर्म करने पर बाधित कर देता है, यह निश्चित बात है। यह खोटे अन्न ही का तो प्रभाव था जिसने भीष्म पितामह- जैसे व्रतधारी और बालब्रह्मचारी को विवश कर दिया कि वह सत्य और न्याय का पक्ष छोड़कर अन्यायकारी दुर्योधन का साथ दें। भीष्म पितामह ने महाभारत में अन्न के इस प्रभाव को स्वयं माना है, इसलिए मन की शुद्धि के लिए सबसे पहली आवश्यक बात यह है कि 'अन्न' (उपयोग सामग्री) शुद्ध हो, वह धर्म तथा अपने बाहुबल से कमाया गया हो। इसके साथ अन्न ऐसा खाया जाए जो विकार पैदा करनेवाला या तामसिक न हो।

जो लोग अधिक लालमिर्च या मांसादि का सेवन करते हैं, उनके स्वभाव में कड़वापन बढ़ जाता है, सहनशीलता कम हो जाती है, मन अधिक चंचल हो उठता है। वे देर तक एक ही आसन में नहीं बैठ पाते। इटली निवासी भक्त पाइथागोरस का सिद्धान्त था कि मनुष्य का मन उन वस्तुओं पर निर्भर है जो भोजन द्वारा उसके पेट में जाती हैं। **ऋषि दयानन्द ने इसीलिए मद्य-मांसादि का निषेध स्थान-स्थान पर किया है।**

२-शिवसङ्कल्प- मन की शुद्धि का दूसरा वैदिक उपाय है कि मन को बुरे संकल्पों तथा विचारों से अलग रक्खा जाए। मन एक ऐसी शक्ति है जो कभी भी सामान्यतः चुपचाप होकर नहीं बैठती। इसे निश्चल तथा विचारों से शून्य करने में बहुत प्रयत्न करना होगा तथा समय भी बहुत लगेगा जो हरेक के वश की बात नहीं है, इसलिए यजुर्वेद के चौंतीसवें अध्याय में 'तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु' मन को शिवसङ्कल्पों से युक्त करने की प्रेरणा है। मन का स्वरूप दर्शनग्रन्थों में स्पष्ट करते हुए कहा है-

सङ्कल्पविकल्पात्मकं मनः।

जिसमें सागर की लहरों की भाँति संकल्प और विकल्प की ऊर्मियाँ उठती रहें वह ही मन है। इस मन को वश में करने या इसकी विशुद्धि का सुगम उपाय यही है कि इसमें बुरे विचारों के स्थान पर शुभ विचारों को स्थान देते रहें। जब सत् संकल्प तथा सुविचार मन में स्थापित होंगे तब खोटे या अशुभ विचार मन में कोई स्थान न पाने से स्वयमेव लौट जाएँगे। प्रसिद्ध कवि रहीम ने लिखा है-

प्रीतम छवि नैनन बसी, पर छवि कहाँ समाय। भरी सराय रहीम लखि पथिक आप फिरि जाय।।

जब इन नेत्रों (मन) में प्रियतम की छवि बस जाती है तब अन्य छवि (अशुभ सङ्कल्प) कहाँ समा पाते हैं, अतः भरी सराय (सुविचारों से पूर्ण मन) को देखकर अन्य पथिक (कुविचार) बाहर से ही लौट जाते हैं।

ऋषि दयानन्द के विषय में प्रसिद्ध है कि कलकत्ते में किसी ने उनसे प्रश्न किया कि 'क्या कभी काम ने आपके मन को पीड़ित नहीं किया?' ऋषि दयानन्द थोड़ी देर के लिए ध्यानमग्न हो गये और फिर आँखे खोलकर बोले-

''मैंने ध्यान द्वारा अपने विगत जीवन का पूरा दर्शन किया है, किन्तु मुझे कहीं ऐसा नहीं दिखाई दिया कि इन विचारों ने पीड़ित किया हो। हो सकता है कि वे आये अवश्य हों किन्तु मन को खाली न पाकर बाहर से ही लौट गये हों।''

इस अत्यन्त गतिशील मन के विषय में यजुर्वेद (३४.६) में हिन्दी कवि के शब्दों में कहा है-

जो जनकुल को बागडोर से इधर-उधर ले-जाता है,
चतुर सारथी ज्यों घोड़े को उत्तम चाल चलाता है।
सदा प्रतिष्ठित हृदय देश में विपुल तीव्रगति अजर महान्,
नित्ययुक्त शिवसंकल्पों से वह मन मेरा हो भगवान्।।

३- सत्य- 'न हि सत्यात् परोधर्मः'- सत्य को परम धर्म कहकर शास्त्रों ने उसकी विशेष महिमा वर्णन की है। योगदर्शन में पाँच प्रकार के यमों में 'सत्य' अन्यतम है। सत्य के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए योगदर्शन के भाष्य में महर्षि व्यास लिखते हैं -

सत्यं यथार्थे वाङ्मनसे। यथा दृष्टं यथानुमितं तथा वाक् मनश्चेति। - योगदर्शन २.३० व्यासभाष्य

सत्य वह है जिसमें मन और वाणी यथार्थ रहे। जैसा देखा हो, जैसा अनुमान किया हो, वैसा ही अपने मन और वाणी को रखना। इसी सूत्र पर भोजवृत्ति में भी ऐसा ही वर्णन है-

सत्यं वाङ्मनसोर्यथार्थत्वम्। मन और वाणी को ठीक रखना सत्य है।

सत्य की इन परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि सत्य का सम्बन्ध वाणी और मन दोनों से है। इनका पालन जाति, देश, काल और समय से निरपेक्ष होकर किया जाता है तभी ये 'महाव्रत' कहे जाते हैं। सत्य के पालन से वाणी अमोघ हो जाती है-

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति। विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।।

शरीर की शुद्धि जल द्वारा, मन की शुद्धि सत्य द्वारा, आत्मा की शुद्धि विद्या और तप द्वारा तथा बुद्धि की शुद्धि ज्ञान द्वारा होती है।

सत्य मानसिक शुद्धि तथा मानसिक बल का सबसे बड़ा साधन है। जो व्यक्ति जीवन में अपने सत्यव्रत पर दृढ़ रहते हैं, उनका मन इतना बलवान तथा निर्मल हो जाता है कि बड़े-से-बड़े भय तथा प्रलोभन भी उन्हें अपने कर्त्तव्य से विचलित नहीं कर पाते। महामना भर्तृहरि लिखते हैं-

सत्यं चेत् तपसा च किं शुचिमनो यद्यस्ति तीर्थेन किम्। -नीतिशतक ५१

यदि सत्य है तो तप का और यदि मन पवित्र हो तो तीर्थ का कोई प्रयोजन नहीं है, इसलिए '**सत्यं ब्रूहि, अनुयाहि साधुपदवीं सेवस्व विद्वज्जनान्**' सत्य का पालन करो और विद्वानों की सेवा कर साधु पदवी को प्राप्त करो। जो सत्यव्रती होते हैं वे-

तेजस्विनः सुखमसूनपि संत्यजन्ति सत्यव्रतव्यसनिनो न पुनः प्रतिज्ञाम्। - नीतिशतक १०५

तेजस्वी सत्यव्रती पुरुष सुखपूर्वक प्राणों का त्याग कर देते हैं, परन्तु अपनी प्रतिज्ञा को नहीं छोड़ते।

मानस तीर्थ- छान्दोग्य उपनिषद् (५.१.५) के अनुसार-

मनो ह वा आयतनम्।

मन ही सबसे बड़ा आयतन-आश्रय या मन्दिर है। मन ही सबसे बड़ा 'तीर्थ' है, क्योंकि-

तरन्ति येन यत्र वा तत्तीर्थम्।

जो तारता है या जहाँ सब तरते हैं, वह 'तीर्थ' हैं। गुरु, यज्ञ, पुरुषार्थ, मन्त्र, जलाशय ये सभी'तीर्थ' हैं। ऋषि दयानन्द स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश (सं. २४) में 'तीर्थ' के सम्बन्ध में अपनी मान्यता स्पष्ट करते हुए लिखते हैं-

''तीर्थ' जिससे दुःख-सागर से पार उतरें कि जो सत्यभाषण, विद्या, सत्सङ्ग, यमादि योगाभ्यास, पुरुषार्थ, विद्यादानादि शुभ कर्म हैं, उसी को 'तीर्थ' समझता हूँ''।

इस दृष्टि से मन भी तीर्थ है-

मन मथुरा दिल द्वारका काया काशी जान। दस द्वार का देहरा, ता में जोत पहचान।। -कबीर

तीर्थों में मन को मथुरा तीर्थ समझो।

स्कन्दपुराण के काशीखण्ड में अगस्त्य ऋषि इन मानस तीर्थों का वर्णन करते हुए कहते हैं-

तीर्थों का भी तीर्थ मन की निर्मलता है।

शरीर का मैल उतारने से मनुष्य निर्मल नहीं होता, मन का मल निकाल देने पर ही भीतर से निर्मल होता है-

ध्यानपूते ज्ञानजले रागद्वेषमलापहे। यः स्नाति मानसे तीर्थे स याति परमां गतिम्।। -स्कन्दपुराण का. ६.४१

प्राणी उसकी रक्षा करते हैं। वह स्वयं देव होकर देवों में जा विराजता है।''

वाह रे चित्तचोर मेरे स्वामिन्! तेरे लिए भकटता मैं संसार में रहा, परन्तु तू तो मेरी प्रतीक्षा इस मन के भीतर ही कर रहा था। सन्त कबीर के शब्दों में-

मन ऐसा निर्मल भया जैसा गंगा नीर।
हरि पीछे फिरै कहत कबीर कबीर।।

-(स्व.) डॉ. ओमप्रकाश वेदालंकार

❑❑❑

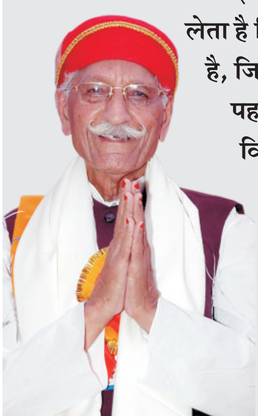

कोई भी व्यक्ति जब यह ठान लेता है कि उसे वह कर गुजरना है, जिससे उसकी एक विशेष पहचान बने, तब कोई भी विरोधी ताकत उसे उसके संकल्पित लक्ष्य से विचलित नहीं कर सकती। किसी भी विरोध, किसी भी बाधा को वह हँसते हुए झेल जाता है।

सत्यार्थ-सन्देश घर-घर पहुँचावें

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

प्राणों से भी प्यारा , है सत्यार्थप्रकाश हमारा

प्राणों से भी प्यारा , है सत्यार्थप्रकाश हमारा।
मोह महातम हरनेवाला, ज्ञान उजाला करने वाला
भव्य भावना भरने वाला दिव्य ज्योति का स्रोत-सितारा ,
है सत्यार्थप्रकाश हमारा।
वैदिक पाठ पढ़ाने वाला, गत गुण-गौरव गाने वाला
फिर से सत् युग लाने वाला,दयानंद ऋषि का चलतारा,
है सत्यार्थप्रकाश हमारा।
शुभ सन्मार्ग सुझाया इसने, बुद्धिवाद उमगाया इसने
गुरुडम का गढ़ ढाया इसने, जग में निर्भय भाव प्रचारा
है सत्यार्थप्रकाश हमारा।
सोता देश जगाया जिसने, प्रेम-प्रवाह बहाया जिसने
स्वाबलंब सिखलाया जिसने, जिसने सत्य धर्म विस्तारा
है सत्यार्थप्रकाश हमारा।
यदि इस पर संकट आयेंगे, रक्षा हित हम डट जायेंगे,
मर जायेंगे कट जायेंगे, मिटा न आगे मिटनेहारा
है सत्यार्थप्रकाश हमारा।
वैदिक धर्म-ध्वजा फहराएँ, बलि-बेदी पर सीस चढाएँ
मरते मरते गाते जाएँ, अजर-अमर अक्षय ध्रुव तारा
है सत्यार्थप्रकाश हमारा।

- आर्योदय से साभार

यथायोग्य व्यवहार

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के नियमों में परस्पर व्यवहार को नियंत्रित करने का स्वर्णिम सूत्र इस प्रकार दिया - **' सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिए।'**

यह नियम सार्वभौम तथा सार्वकालिक प्रतीत होता है। समुदाय की इकाई कोई भी हो परस्पर व्यवहार का नियमन इसी आधार पर होना प्रशस्त है। परिवार, समाज, राष्ट्र में इसी से समता स्थापित हो सकती है। सबसे धर्मानुसार तथा प्रीतिपूर्वक व्यवहार की बात तो सभी करते हैं परन्तु यथायोग्यवाद को स्व-सुविधानुसार स्वीकार अथवा अस्वीकार करते हैं। परस्पर व्यवहार के नियमन में 'धर्म' तथा 'प्रीति' तो केन्द्रीय तत्त्व होने ही चाहिए, इसमें दो राय नहीं हो सकती; **परन्तु लोकैषणा, वित्तैषणा अथवा अन्य स्वार्थ-सिद्धि के प्रयोजन से 'यथायोग्य व्यवहार' को त्यागना उचित नहीं।**

सत्य की उपेक्षा तथा असत्य का प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष समर्थन तुष्टीकरण मात्र है तथा परिणाम में गलती करने वाले को पुष्ट तथा पुनः गलती करने को प्रेरित करता है। अगर उक्त सूत्र की उपेक्षा की जावेगी तो समाज के समक्ष एक ऐसा उदाहरण प्रस्तुत हो जावेगा कि गलत करने पर भी कोई किसी के प्रति जवाबदेह नहीं रहेगा। महर्षि ऐसा नहीं चाहते थे। जब बाबू हरीशचन्द्र चिन्तामणि गबन कर भाग गया तो ऋषि श्यामजी कृष्ण वर्मा को लिखते हैं कि वह 'बाबू' आजकल कहाँ है? हमें उस पर नालिश करनी है। महर्षि दयानन्द के इस कथन में निहित सन्देश तो पाठकगण समझ ही गए होंगे। यही यथायोग्यवाद है।

'गलत करने वाले को दण्ड तथा उत्तम कर्म करने वाले को पुरस्कृत करना' ही समुदाय को स्वस्थ रख सकेगा। मत्स्यन्याय स्वस्थ समाज का अंग नहीं हो सकता। 'समर्थ को नहीं दोष गुसाईं'- यह कथन बीमार समुदाय की निशानी है।

वेद भगवान भी आज्ञा देते हैं- **इन्द्रं वर्धन्तु अप्तुरः कृणवन्तो विश्वमार्यम् अपघ्नन्तो अराव्णः'**। अगर विश्व को श्रेष्ठ बनाना है तो 'इन्द्रों'- सत्य मार्ग पर चलने वाले धार्मिक परोपकारी जनों का वर्धन करो तथा अराव्णः अर्थात् कुटिल, कपटी, कृपण लोगों का नाश करो।

'ऋषि तो मनुष्य होने का लक्षण यही करते हैं-

'.......(जो) अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं की चाहे वे महा अनाथ निर्बल और गुण रहित क्यों न हो उनकी रक्षा, उन्नति, प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती, सनाथ महाबलवान और गुणवान भी हो तथापि उसका नाश अवनति व अप्रियाचरण सदा किया करें। (सत्यार्थ प्रकाश पृ. ५८५)

जब तक समुदाय या समाज उपरोक्त सूत्र में आबद्ध रहा; स्वात्मानुशासन ने राज्य की आवश्यकता को रेखांकित नहीं किया। परन्तु जब इससे विपरीत होने लगा तो अराजकता व्याप्त हो गई। तब ऐसी संस्था की आवश्यकता अनुभव की गई जो उक्त सूत्र को बलपूर्वक लागू करवा सके। दुष्टों को दण्ड दे सके।

जिस प्रकार हमारी सेना का सबल, संसाधनयुक्त होना राष्ट्र की सीमाओं पर शान्ति सुनिश्चित करता है ठीक इसी प्रकार अपराधियों को कठोर दंड देना राज्य की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था की गारन्टी है। दंड कठोरता नहीं नागरिकों के जानमाल, प्रतिष्ठा की, सुरक्षा की राज्य की ओर से प्रतिभू है। जिस समाज में, समुदाय में दोषियों को दंड तथा सत्य पथ पर चलने वालों को सम्मान नहीं मिलता वह समुदाय अपनी प्रतिष्ठा खो, विनाश के बीज अपने अंदर बो देता है और स्वयं विनाश के कगार की ओर चल देता है। किसी भी समाज में यदि इस आधार पर दोषियों का संरक्षण किया जाता है कि ऐसा न करने से समाज/संगठन को नुकसान पहुँचेगा तो ऐसा कहने वाले एक ऐसी भूल कर रहे होते हैं जिसका दुष्परिणाम उन्हें भोगना ही होगा।

राज्य की उत्पत्ति के संबंध में एक सिद्धान्त प्रतिपादित किया जाता है- प्रारम्भ में जब राज्य न था तब लोग समुदाय में आपसी विनियम के आधार पर रहते थे। परन्तु मानवीय दौर्बल्य के चलते कुछ लोग जब अन्यों को सम्पत्ति, प्रतिष्ठा का हरण अपने बल के आधार पर करने

लगे तो मत्स्यन्याय स्थापित हो गया अर्थात् बड़ी मछली छोटी मछली को खाने लगी। 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' यह कहावत चरितार्थ हो गयी। जब इस अराजकता से मनुष्य परेशान हो गए तो 'भगवान मनु' के पास पहुँच उनसे राजा बन न्याय स्थापित करने हेतु निवेदन किया। इस प्रकार मनु सृष्टि के प्रथम शासक बने। निष्पक्ष न्याय की अपरिहार्यता, दुष्टों से श्रेष्ठों के जन-धन की रक्षा ही राज्य का आधार तथा प्रमुख कर्तव्य था और **न्याय की स्थापना का आधार है दंड।**

गीता के शब्दों में इसी को **'परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृतां ,धर्म संस्थापनार्थाय ......'** कहा गया है। **साधुओं की रक्षार्थ दुष्ट-दलन में कोई संकोच न होना चाहिए।** जब अपराधियों को दंड नहीं मिलता तब राज्य में अन्याय-वृद्धि होकर वह विनाश को प्राप्त होता है तो दूसरी ओर निर्बल राज्य का यह संकेत अन्य दस्युओं को प्रबल होने हेतु प्रेरित करता है। अतः निश्चित ही न्याय का आधार दंड है। मनुस्मृति में लिखा है **'जो दंड है वही पुरुष, राजा, वही न्याय का प्रचारकर्ता और सबका शासनकर्ता वही चार वर्ण और चार आश्रमों के धर्म का प्रतिभू अर्थात् जामिन है।**

२.....बुद्धिमान लोग दंड को धर्म कहते हैं।
३. जो दंड अच्छे प्रकार विचार से धारण किया जावे तो वह सब प्रजा को आनन्दित कर देता है....।
४. जहाँ कृष्ण वर्ण-रक्त नेत्र-भयंकर पुरुष के समान,पापों का नाश करने वाला दंड विचरता है वहाँ प्रजा मोह को प्राप्त न होकर आनन्दित होती है, परन्तु जो दंड को चलाने वाला पक्षपातरहित विद्वान् हो तो(मनुस्मृति)।
आदर्श राज्य में विधि के समक्ष सभी समान होने चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने राजा को भी अदण्ड्य नहीं माना है।.... ... **'जिस अपराध में साधारण मनुष्य पर एक पैसा दण्ड हो, उसी अपराध में राजा को सहस्र पैसा दंड होवे। (सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ १७३)** क्योंकि राजा, मंत्री आदि विद्या, बुद्धि, धन बलादि से समृद्ध हैं ,विवेकशील हैं अतः उनसे अपराध होना ही नहीं चाहिए और यदि हो तो साधारण मनुष्य से ज्यादा दंड मिले। पर आज इसके ठीक विपरीत हो रहा है। एक भूखा बालक ब्रेड छीनकर भाग गया तो उस पर कई वर्षों तक मुकदमा भी नहीं चला। वह जेल में सड़ता रहा और प्रभावशाली नेता जब अपराध करता है तो उसे अनेक प्रकार से बचाने के प्रयास उसके हमराज करते हैं। भारतीय लोकतंत्र अब भीड़तंत्र में बदल चुका है। '**हाथ की ताकत**' सर्वोपरि हो चुकी है। सबसे खतरनाक बात है कि अपराधी के साथ '**हाथ की ताकत**' की सांठगांठ हो चुकी है। गत दिनों में कुछ मंत्रियों के अपराधों का पर्दाफाश हुआ तो उनके समर्थन में जुलूस निकाले गए। कुर्सी को हाथ का सहारा चाहिए। शासक अन्याय, अपराध एवं पक्षपात का नंगा नाच तो स्वीकार कर सकता है पर 'हाथ खो देना' वह किसी कीमत पर नहीं चाहता।

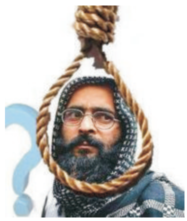

पंजाब के पूर्व मुख्यमंत्री बेअंत सिंह की हत्या कर देने वाले बलवन्त सिंह राजौना का केस इस मानसिकता का भयावह उदाहरण है। अदालत ने राजौना को फाँसी की सजा दी। जेलर ने तकनीकी कारण बताकर फाँसी देने से मना कर दिया। राजौना ने अपनी सजा को निःसंकोच स्वीकार किया है उसने अपील भी नहीं की। न ही फाँसी की सजा माफ करने की गुहार लगाई फिर भी जब अकाल तख्त के जत्थेदार ज्ञानी गुरुबचन सिंह के निर्देश पर प्रकाश सिंह बादल ने राष्ट्रपति के समक्ष राजौना की फाँसी पर रोक लगाने की बात कही तो अकाली दल यहाँ तक कि अमरिन्दर सिंह भी वही राग अलापने लगे। इस सबके पीछे समुदाय विशेष के 'हाथ' अपने साथ बनाये रखने की कवायद स्पष्टरूपेण परिलक्षित हो रही है। यहाँ तक कि बेअंत सिंह जिनकी हत्या हुई थी उनका परिवार भी राजौना की खिलाफत नहीं कर रहा। यह समाज में मत्स्यन्याय का परिवर्तित स्वरूप है। **अब शारीरिक ताकत का स्थान हाथ की ताकत ने ले लिया है।** संसद पर आक्रमण करने वाले अफजल गुरु की सजा माफी के प्रश्न का समर्थन जम्मू कश्मीर की विधानसभा में एक पक्ष इस आधार पर करता है कि ऐसा न करने पर राज्य में शांति व्यवस्था भंग हो जावेगी। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गाँधी के हत्यारों की सजा माफी के लिए तमिलनाडु विधानसभा ने पहले से ही प्रस्ताव पारित कर रखा है। **जिस राष्ट्र, समुदाय, समाज, संगठन में न्याय 'हाथ की ताकत' पर निर्भर करेगा उसके बारे में तो यही कहा जा सकता है कि 'राम भरोसे' चल रहा है।**

- अशोक आर्य
०९३१४२-३५७०१, ०९००१३-३६८३६

❑❑❑

प्रसिद्ध काव्यशास्त्री आचार्य मम्मट कहते हैं-'**नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति**' अर्थात् नव रसों के योग से मनोहारिणी काव्य सृष्टि की रचना करने वाली कवि की भारतीय-वाणी या सरस्वती की जय हो। विश्व की सैंकड़ों भाषाओं में काव्य रचनाएँ होती हैं। इनके रचनाकार कविगण किस विश्व कवि के काव्य से प्रेरणा लेते हैं?कवियों का कवि आदिकवि कौन है?इसका उत्तर भगवती श्रुति स्वयं देती है-'**पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति**'(**अथर्व. १०।८।३२**) अर्थात् प्रजापति कवि का अमर अजर काव्य देखो,जो कभी जीर्ण नहीं होता और न कभी समाप्त होता है। परमात्मा का 'दृश्यकाव्य' यह संसार है और 'श्रव्यकाव्य' भगवान् वेद है। श्रव्यकाव्य वेदों से प्रेरणा लेकर और 'दृश्यकाव्य' इस जगत् के उपादानों को ही सामग्री बनाकर लौकिक कवि अपने काव्य का निर्माण करता है। वेद सभी सत्य विद्याओं का मूल है। अतः काव्यशास्त्र और काव्यग्रन्थों का मूल भी वेद है। ऋग्वेद की रचनाशैली में उत्कृष्ट कवित्व का दर्शन होता है। ऊषादेवी से सम्बन्धित ऋचाएँ मनोरम कल्पना,श्रंगार और सौन्दर्य का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं-'द्युलोक की कन्या ऊषा प्रकाश से जगमगाती हुई आ गई है। वह अंधेरे को हटाती हुई अपने शुभ्र स्वरूप को उस प्रकार प्रकट कर रही है,जैसे कोई सुन्दर रमणी सरोवर से स्नान करके बाहर निकली हो।'

एषा शुभ्रा न तन्वो विदानोर्ध्वेव स्नाती दृशय नो अस्यात्। अप द्वेषो बाधमाना तमांस्युषा दिवो दुहिता ज्योतिषागात्।। (ऋग्वेद ५।८०।५)।।

ऋग्वेद के नदी सूक्त में भाषा का प्रवाह,बलशालिता,गत्यात्मकता और अर्थसौन्दर्य सभी कुछ मनोरम है-

'ये उन्मुक्त होकर बहती नदियाँ,आनन्द से उच्छलित प्रभदाओं की भाँति अठखेलियाँ करती हुई आगे बढ़ रही हैं। ये सरिताएँ क्या-क्या कह रही हैं,किन-किन पत्थरों को तोड़कर आगे बढ़ रही हैं,यह उन्हीं से पूछो।'

डॉ.ज्वलन्त कुमार शास्त्री, अमेठी

वेदों में काव्य सौन्दर्य एवं ललित कलाएँ

एता अर्षन्त्यलला भवन्तीर् ऋतावरीरिव सड्.क्रोशमानाः।
एता विपृच्छ किमिदं भनन्ति कमापो अद्रिं परिधिं रुजन्ति।। (ऋ. ४।१८।६)

इस प्रकार वेदों में भाव सौन्दर्य,अर्थगाम्भीर्य,उच्च कल्पनाएँ,रस,छन्द,अलंकार आदि सभी तत्वों का सुन्दर और प्रचुर समावेश पाया जाता है। महामुनि भरत ने स्वीकार किया है कि चारों वेदों से नाट्यशास्त्र की उत्पत्ति हुई है-

जग्राह पाठ्यमृग्वेदात् सामभ्यो गीतमेव च।
यजुर्वेदादभिनयान् रसान् आथर्वणादपि।। (नाट्यशास्त्र १।१७)

नाट्यवेदं ततश्चक्रे चतुर्वेदाड्.गसम्भवम्।। (वही,१।१६)

अर्थात् -ऋग्वेद से पाठ्य=संवाद, कथोपकथन, यजुर्वेद से अभिनय,सामवेद से गीत-संगीत तथा अथर्ववेद से रस के तत्वों को लेकर भरतमुनि ने नाट्यवेद या नाट्यशास्त्र की रचना की है।

ललित कलाओं का मूल भी वेद है। नृत्य,गीत-संगीत और वाद्य के लिए आजकल 'ललित कला'शब्द का प्रयोग होता है। ब्राह्मण ग्रन्थों के रचनाकाल में इसके लिए शिल्प का प्रयोग होता था- '**त्रिवृद् वै शिल्पं नृत्यं गीतं वादितमिति**। (**कौषीततकि ब्राह्मण** २९।५) यजुर्वेद में कहा गया है कि ऋग्वेद और सामवेद में शिल्प विद्या अर्थात् नृत्य,संगीत और वाद्य का भी वर्णन है-

'ऋक्सामयोः शिल्पे स्थः? (यजुर्वेद ४।९)

आंगिक आधार पर अर्थात् ताल और लय पर आश्रित अंग-संचालन 'नृत्त' है। किन्तु नृत्य में भावाभिनय करना होता है।

अन्यद् भावाश्रयं नृत्यं,नृत्तं ताललयाश्रम् ।। (दशरूपकम्)
'नृत्त' सामान्य कोटि के लोगों के लिए है किन्तु 'नृत्य' में भावाभिनय होने के कारण विशेषज्ञता आवश्यक है। नृत्य के साथ संगीत और वाद्य की भी संगति होती है। नृत्य में विविध रूप धारण करने की तुलना मोर,गन्धर्व और अप्सराओं से की गई है-**'आ नृत्यतः शिखण्डिनो गन्धर्वस्याप्सरापतेः।'** (अथर्व. ४।३७।७) । ऋग्वेद में यह वर्णन मिलता है कि-खुले मैदान में कृष्णमृगों का नृत्य हुआ और उसमें गरुड़ पक्षियों ने गीत गाया-

'सुपर्णा वाचमक्रतोप द्यवि, आ खरे कृष्णा द्रषिरा अनर्तिषुः (ऋग्वेद १०।६४।५)।

सामवेद संगीत प्रधान है। गीत या गान को साम कहते हैं। **'गीतिषु सामाख्या'** (पूर्व मीमांसा(२।१।३६)। संगीत के सात स्वर सा रे गा मा प ध नि, सा नि ध प म ग रे सा ये सात स्वर षड्ज, ऋषभ गान्धार,मध्यम,पंचम धैवत और निषाद स्वरों के संक्षिप्त संकेत हैं। इन सातों स्वरों का उद्गम सामवेद है। तैत्तिरीय संहिता कहती है कि देवता ऋचाओं या यजुषों में नहीं अपितु सामन् अर्थात् संगीत में ही निवास करते हैं। संगीत ही उपासना काण्ड है जो सामवेद का विषय है अर्थात् देवत्व की प्राप्ति के लिए उपासना आवश्यक है।

वेदों में विभिन्न वाद्यों का भी वर्णन है। जैसे 'वीणा' अर्थात् सितार, 'तूणव' मुरली या बाँसुरी को कहते हैं। शंख, तलव, आडम्बर, वाणीची, कर्करी, सूर्मि, गर्गर, गोधा, पिंगा, वेणु, नाडी, वाण, आघार, आघारी आदि विविध वाद्यों का वर्णन वेदों में है। ढोलक या तबला के लिए 'तलव' शब्द है। बड़े ढोल को 'आडम्बर' , हारमोनियम के लिए 'सूर्मि', बीन को 'कर्करी', झांझ को 'आधार' और मजीरा को आधारी,कहते हैं। यजुर्वेद में मंत्र है- **'महसे वीणावादम्** (यजुर्वेद ३०।१६),**'आनन्दाय तलवम्'** (यजु. ३०।२०)।,**'शब्दाय आडम्बराघातम्'**। ऋग्वेद के **'सूर्म्यं सुषिराभिव'** (ऋग्वेद ८।६६।१२),**'वदसि कर्करिर्यथा'** (ऋ. २।४३।३) मंत्रों में सूर्मि=हारमोनियम, कर्करी=बीन का उल्लेख है। महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी में 'मृदंग' बजाने वाले को 'मार्दङ्गि' पणव या ढोल, नगाड़ा बजाने वाले को 'पाणविक' तथा दर्दुर-मिट्टी के घड़े को बजाने वाला दार्दुरिक कहा गया है। **'द्वन्द्वश्च प्राणितूर्यसेनाङ्गानाम्** (अष्टा.।४।२), **सत्याययाशरूपवीणातूलश्लोकसेनालोमत्वचव-र्मवर्णचूर्णचुरादिभ्यो णिच्'**(३।१।२५) तथा **'मड्डुकझर्झरादणन्यतरस्याम्**(४।४।५६)।

इन शिल्पकलाओं अथवा ललित कलाओं का प्रयोजन आत्मसंस्कृति अर्थात् चारित्रिक एवं नैतिक उत्थान है। ऐतरेयब्राह्मण(६।२७) तथा गोपथब्राह्मण(२।६।७) का वचन प्रमाण है -
'आत्मसंस्कृति ववि शिल्पानि,एतैर्यजमान आत्मानं संस्कुरुते ।।'

❑❑❑

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके,एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) की द्वितीय आवृत्ति छपने में है। कृपया निम्नानुसार सहयोग कर लागत मूल्य से आधी कीमत में सत्यार्थ प्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया,उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास
भंवरलाल गर्ग, कार्यालय मंत्री
डॉ.अमृत लाल तापड़िया, उपमंत्री-न्यास

जिन सज्जनों को यह पत्रिका प्राप्त हुई है, वे तो अवश्य ही 'सत्यार्थ - सन्देश' परिवार से तुरन्त जुड़ने की कृपा करें।

डॉ. वी.वी. बड़थ्वाल एवं डॉ. पुष्पा बड़थ्वाल

अनिवार्य शिक्षा

आज का बालक राष्ट्र की अमूल्य धरोहर है, वही राष्ट्र का भविष्य, कर्णधार और राष्ट्र निर्माता एवं देश की सुरक्षा का सजग प्रहरी है। राष्ट्र के इन भावी निर्माताओं के शैक्षणिक, मानसिक, शारीरिक, चारित्रिक व आध्यात्मिक दृष्टि से समृद्ध होने पर ही राष्ट्र अपने भविष्य को सुरक्षित कर सकते हैं। देश के सामाजिक आर्थिक विकास में शिक्षा अपनी अहम् भूमिका निभाती है। शिक्षा ही सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक व मनोवैज्ञानिक क्रान्ति का आधार है, अतः बालकों की समुचित शिक्षा व्यवस्था करना राज्य एवं समाज का प्रमुख दायित्व है, सुस्थिर एवं प्रभावी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से बालक में अनेक प्रकार की चारित्रिक विशेषताओं को विकसित किया जा सकता है, ताकि वे भावी जीवन में एक उत्तरदायी नागरिक के रूप में तैयार किए जा सकें और राष्ट्र निर्माण में अपनी सार्थक भूमिका निभा सकें। इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रख कर ८६वें संविधान संशोधन अधिनियम २००१ के माध्यम से संविधान में एक नया उपबन्ध (Article 21A in part-III) सम्मिलित किया गया, इसमें ६-१४ वर्ष की आयु के बालकों के लिए अनिवार्य एवं निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा को मूलभूत अधिकारों के अन्तर्गत सम्मिलित किया गया। सार्वत्रिक प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अनेक योजनाएँ क्रियान्वित की गईं। शिक्षा प्रदान करने का राष्ट्रीय कार्यक्रम, मिड-डे मील योजना, बालिका शिक्षा के क्षेत्र में स्थापित किए गए कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय आदि इस दिशा में किए गए महत्वपूर्ण प्रयास हैं, किन्तु इसके बावजूद देश में करोड़ों बालक गुणवत्तायुक्त शिक्षा से वंचित हैं। समाज के कमजोर वर्गों- अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों, अन्य पिछड़ी जातियों, घुमन्तु जातियों, बेघरबार लोगों के लाखों बालक पढ़ाई अधूरी छोड़कर अर्थार्जन में लग जाते हैं, ऐसे समय में शिक्षा का अधिकार अधिनियम २००९ पारित किया जाना एक ऐतिहासिक और क्रांतिकारी प्रयास है। यह भारतीय संविधान की कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का एक अनुपम उदाहरण है। इसकी प्रभावी क्रियान्विति से भारत में व्याप्त निरक्षरता को उन्मूलित करने में मदद मिलेगी व सार्वत्रिक शिक्षा के उद्देश्य को भी प्राप्त किया जा सकेगा।

बालकों को निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा प्राप्ति का अधिकार अधिनियम- 2009

'इस में राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पाँचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे अपने लड़कों और लड़कियों को घर में न रख सकें। पाठशाला अवश्य भेज देवें। जो न भेजे वह दण्डनीय हो।'

- महर्षि दयानन्द सरस्वती

(१३० वर्ष पूर्व)

प्रमुख तथ्य-

भारत में शिक्षा समवर्ती सूची की विषयवस्तु है, जिसमें राज्य एवं केन्द्रीय सरकार दोनों ही अपनी नीतियाँ/विधियाँ निर्धारित कर सकते हैं। प्रस्तुत अधिनियम १ अप्रेल, २०१० से प्रभावी होने के पश्चात् यह कानून बन गया है जिसे क्रियान्वित करना राज्य का परम दायित्व है। इससे पूर्व भारतीय संविधान के अनुच्छेद ४५ के अन्तर्गत राज्य के निर्धारित नीति निर्देशक तत्वों के अन्तर्गत संविधान के अध्याय ४ में शामिल था, जिसे राज्य को क्रियान्वित करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता था, किन्तु इसे अब अध्याय ३ के अनुच्छेद २१ में शामिल कर इसे मूलभूत अधिकार की श्रेणी में ला दिया गया है। अब कोई भी ६-१४ वर्ष की आयु का बालक शिक्षा को निःशुल्क प्राप्त करने के लिए राज्य को वैधानिक रूप से बाध्य कर सकता है। यह सार्वत्रिक प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने की दिशा में राज्य द्वारा किया गया महत्वपूर्ण कदम है, इससे 'सामवेशी शिक्षा' की ओर किए गए प्रयासों को बल मिलेगा, शिक्षा की परिधि में समाज के सभी वर्गों को लाने की मूल भावना को मूर्तरूप दिया जा सकेगा, शिक्षा के क्षेत्र में व्याप्त क्षेत्रीय, व्यक्तिगत व वर्गवार विषमताओं को भी समाप्त किया जा सकेगा।

इस अधिनियम की मुख्य विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं -

१. राज्य सरकारों व स्थानीय निकायों द्वारा ये प्रयास किए जाएँ कि बालकों के निवास से १ किमी परिधि के अन्तर्गत प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना की जाए, ताकि ६-१४ वर्ष के बालक बिना किसी असुविधा के विद्यालयों तक पहुँच सकें।

२. छः से आठवीं कक्षा तक के विद्यालय, छात्र के निवास स्थान से ३ किमी की परिधि में स्थापित किए जाएँगे।

३. प्रत्येक विद्यालय को कुछ न्यूनतम आधारभूत शैक्षणिक संरचना उपलब्ध कराई जाएगी, जिनमें मुख्यतः विशिष्ट योग्यताधारी अध्यापक, खेलकूद के मैदान, पेयजल, शौचालय आदि शामिल हैं।

४. वित्त आयोग द्वारा अधिनियम की क्रियान्विति के लिए राज्यों को रु. २५००० करोड़ देने का प्रावधान रखा है, किन्तु केन्दीय सरकार का अनुमान है कि इस कार्य को सुसम्पन करने के लिए आगामी पाँच वर्ष के लिए रु. १.७३ लाख करोड़ की आवश्यकता होगी।

५. भारत में ६-१४ वर्ष की आयु वर्ग में २२ करोड़ बालक हैं, जिसमें से ४.६ प्रतिशत बालक विद्यालयी शिक्षा के दायरे से बाहर हैं, इस प्रकार लगभग ६२ लाख वंचित बालकों को शिक्षा की परिधि में लाया जाएगा।

६. ६-१४ वर्ष आयु वर्ग के अशिक्षित और विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रहे बालकों को चिह्नित करने का कार्य स्थानीय विद्यालय की प्रबन्ध समिति अथवा स्थानीय निकायों द्वारा किया जाएगा।

७. स्थानीय निकाय के द्वारा ही बालकों के चिह्नांकन के लिए परिवार स्तर पर सर्वेक्षण नियमित रूप से आयोजित किए जाएँगे, इस से प्राथमिक शिक्षा से वंचित बालकों का चिह्नांकन करने में मदद मिलेगी।

८. निजी क्षेत्र के प्रत्येक विद्यालय में २५ प्रतिशत स्थान कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों के लिए आरक्षित किए जा सकेंगे और उनसे वही शुल्क लिया जाएगा, जो सरकारी विद्यालय के समकक्ष छात्रों से लिया जाता है। (उच्चतम न्यायालय द्वारा हाल ही में अनुमोदन)

९. इस आयु वर्ग के किसी भी बालक को आयु प्रमाण-पत्र के अभाव में प्राथमिक शिक्षा पूर्ण होने तक विद्यालय से निष्कासित नहीं किया जा सकेगा।

१०. शिक्षा में परिमाणात्मक वृद्धि के साथ-साथ बालकों को गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान की जाएगी, इस दिशा में निम्नलिखित प्रयास किए जाएँगे-

   १. योग्यताधारी शिक्षकों की भर्ती
   २. विद्यालय में उपयुक्त आधारभूत सुविधाओं का विकास
   ३. प्रभावी पाठ्य-सामग्री का विकास
   ४. शिक्षकों को सामयिक प्रशिक्षण दिये जाने की व्यवस्था

११. अधिनियम में छात्र-शिक्षक अनुपात (३०:१) निर्धारित किया गया है, इस अनुपात को प्राप्त करने के लिए १२ लाख अतिरिक्त प्रशिक्षित अध्यापकों की आवश्यकता होगी।

१२. केन्द्रीय सरकार द्वारा ही शिक्षक प्रशिक्षण के मापदण्ड निर्धारित किए जाएँगे, उसी के द्वारा तकनीकी सहयोग व संसाधन राज्य सरकारों को उपलब्ध कराए जा सकेंगे, ताकि शैक्षणिक शोध, नवाचार व क्षमताओं के विनिर्माण व विकास को प्रोत्साहन देकर उन्हें प्रोन्नत किया जा सके।

१३. विद्यालय पाठ्यक्रम के निर्माण व मूल्यांकन प्रक्रिया की ओर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

१४. पाठ्य-सामग्री की विषयवस्तु का निर्माण इस प्रकार किया जाएगा कि बालक में नैतिक मूल्यों का विकास किया जा सके इस प्रकार की शिक्षा प्रणाली के माध्यम से बालक के शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास की ओर पर्याप्त ध्यान दिया जाएगा।

१५. विभिन्न शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से बालक में ज्ञान की क्षमता का निर्माण व प्रतिभा के विकास की ओर पर्याप्त ध्यान दिया जाएगा।

१६. सम्पूर्ण पाठ्यक्रम बालक केन्द्रित व मैत्रीपूर्ण होगा।

१७. शिक्षक द्वारा बालकों को किसी भी प्रकार की शारीरिक-मानसिक प्रताड़ना नहीं दी जाएगी।

१८. अधिनियम के अन्तर्गत निजी ट्यूशन की प्रवृत्ति को निषेधित किया गया है। ❑❑❑

नहीं रहे काका सा.

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्।
ओ३म् क्रतो स्मर क्लिबे स्मर कृतं स्मर।। यजुर्वेद ४०/१५

न्यास के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री लालचन्द जी मित्तल के निधन का अत्यन्त दुःखद समाचार गहरी पीड़ा की अनुभूति के साथ सुना गया। न्यास के जन्म के साथ ही आपका जुड़ाव न्यास के साथ रहा। प्रारम्भ से ही आपने कोषाध्यक्ष के पद पर अपनी सेवाएँ दीं। यही नहीं तन-मन-धन से सर्वतोभावेन न्यास के माध्यम से वैदिक संस्कृति के प्रचार प्रसार में अपना सहयोग श्री मित्तल देते रहे। इसी प्रकार के संस्कार उन्होंने अपने पुत्र पुत्रियों में डाले। फलतः आपके पुत्र श्री नारायण मित्तल आज न्यास को कोषाध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

श्री लालचन्द जी का सबसे बड़ा कार्य यह रहा कि आज के युग में जबकि आत्म केन्द्रित मनःस्थिति सर्वत्र प्रभावी दिखाई देती है वहाँ पूरे परिवार को एक सूत्र में पिरोकर उनके अंदर इस प्रकार के संस्कार के बीजों का रोपण किया कि आज सभी भाई- बहिन, पुत्र-पुत्रवधूएँ एक संयुक्त इकाई के रूप में आपके व्रतों को धारण किए हुए समाज में सुगन्धि बिखेर रहे हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा कि वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान् ! जिसके माता और पिता धार्मिक,विद्वान् हों। श्री लालचन्द जी मित्तल ऐसे ही थे। अतः मित्तल परिवार भाग्यशाली है कि उन्हें ऐसा पिता प्राप्त हुआ। यहाँ यह भी ध्यान रखने योग्य है कि सत्यार्थ प्रकाश के ही द्वितीय समुल्लास में ऋषि दयानन्द ने पिता के कर्तव्यों का संकेत किया है कि किस प्रकार जहाँ एक व्यक्ति अपनी भौतिक सम्पत्ति अपने बच्चों को दे,वहीं दिव्य गुणों को भी इस प्रकार उनके अंदर आरोपित करे कि वे उत्तम कोटि के मनुष्य बन सकें। प्रभु की बड़ी कृपा है कि उनकी साधना सफल हुई।

जब भी कोई व्यक्ति हमारे मध्य में से जाता है तो पीड़ा की अनुभूति अवश्य होती है परन्तु तात्विक रूप से चिन्तन करने पर यही पता चलता है कि 'जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः' अर्थात् जो पैदा होता है उसकी मृत्यु भी सुनिश्चित है। जिसका संयोग होता है उसका वियोग भी अवश्यंभावी है। पर वस्तुतः यह मृत्यु तो होती ही नहीं है । केवल भौतिक शरीर व आत्मा का वियोग ही मृत्यु कहलाता है। अतः हम सभी को इस बात पर धैर्य धारण करना ही होगा कि परमेश्वर की व्यवस्था के अंतर्गत दिवंगत आत्मा अपने गन्तव्य को प्राप्त कर चुकी होगी। परन्तु उनके कार्यों की सुगन्धि सर्वत्र प्रसरित होकर युगों-युगों तक उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाती रहेगी। हमारा कर्तव्य तो अब यही शेष बचता है कि हम इस स्मृति के प्रसारण में अपना सकारात्मक योगदान दें और ऐसे कार्यों से विरत रहें जिनके करने से उनको कष्ट पहुँचता हो। यही हमारा कर्तव्य है। यही दिवंगत आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। आएँ हम सब व्रत लें कि जिस प्रकार श्री लालचन्द जी ने अपना संपूर्ण जीवन सत्य सनातन वैदिक संस्कृति को समर्पित किया था उसी का अनुकरण हम सब लोग करें।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान दें और सभी परिवारिजनों को भक्ति-शक्ति और क्षमता प्रदान करें कि वे उनके बताये मार्ग पर चलकर अपने जीवन का भी निर्माण करें और समाज के घटक के रूप में भी अपनी उपयोगिता सिद्ध करें।

- सभी न्यासीगण

गोवंश - वध बन्द हो

सम्माननीय डॉ. मनमोहन सिंह जी,
प्रधानमंत्री एवं अध्यक्ष योजना आयोग,
भारत सरकार - १५२ नार्थ ब्लॉक,नई दिल्ली

नमस्ते

विषयः- बारहवीं पंचवर्षीय योजना के प्रारूप के चेप्टर १२ "Meat and Abattoirs" में गोमांस निर्यात पर लगे प्रतिबंध को हटाने,मांस निर्यात बढ़ाने तथा नये अत्याधुनिक यांत्रिक कत्लखाने स्थापित कराने तथा पुराने कत्लखानों की पशुवध क्षमता बढ़ाने की संस्तुति भारत के संविधान में निहित राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत,राज्यों के गोवंश संबंधी संरक्षण सम्बन्धी कानूनों,माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा अपने निर्णयों में दी गई व्यवस्था तथा निर्देशों एवं जनहित की स्पष्ट अवज्ञा है, उसे निरस्त किये जाने हेतु अनुरोध।

मान्यवर,

हमारा गोवंश हमारे आरोग्य,सात्विक ऊर्जा का स्रोत है,समृद्धि एवं कम लागत से पौष्टिक खाद्य पदार्थ उत्पन्न करने वाली पर्यावरण रक्षक-रोजगार मूलक-स्वावलम्बी व टिकाऊ कृषि का आधार है। उसका दूध,दही व घी अमृत गोबर मल शोधक तथा गोमूत्र महौषधि है। उसके वत्स (बछड़े) शिव अर्थात् लोक कल्याण के वाहक हैं। हमारा पशुधन हमारी ग्राम अर्थव्यवस्था की रीढ़ है।

विद्वान् लेखक द्वारा भारत के प्रधानमंत्री जो कि योजना आयोग के अध्यक्ष भी हैं को लिखा गया यह ज्ञापन पत्र एक आँखे खोल देने वाला दस्तावेज है। किस प्रकार कुछ लोगों को अर्थ-लाभ पहुँचाने हेतु भारतीय संविधान व मानवीय संवेदना की हत्या की जा रही है। युग प्रवर्तक करुणा वरुणा मय देव दयानन्द ने आज से लगभग १३५ वर्ष पूर्व 'गौ करुणानिधि' नामक लघु पुस्तिका लिखी थी। जिसमें गौ रक्षा के आर्थिक पक्ष पर प्रकाश डाला था तथा गोकृष्यादि रक्षिणी सभा की स्थापना का विचार दिया था। आवश्यकता है कि आर्य समाज इस संघर्ष में पुनः अग्रणी बने। पाठकों से निवेदन है कि ऐसे ज्ञापन पत्र सरकार को अधिकाधिक संख्या में भेजें। - सम्पादक

परमाणु वैज्ञानिक (Nuclear Scientist) डॉ. मन्नम मूर्ति ने अपने नवाविष्कृत यंत्र 'यूनिवर्सल स्कैनर' से मनुष्यों, पशुओं, पेड़-पौधों तथा वस्तुओं की सात्विक ऊर्जा/आभामंडल (Aura) को नापकर अपने शोध पत्र (Research Paper) "The Positive Cow Energy" में बताया है कि सामान्यतः मनुष्य का आभामंडल २.५ मीटर,स्वदेशी गाय का ४.५ मीटर से ६ मि.,गोदुग्ध का १२ मि. गाय के घी का १४ मि., गोमूत्र का ८.६० मि. तथा गोबर का ६ मि. होता है। उन्होंने सिद्ध किया है कि गो प्रदत्त उपर्युक्त पदार्थों को ग्रहण करने तथा गाय की सेवा करने से मनुष्य की सात्विक ऊर्जा बढ़ जाती है और परिणामस्वरूप उसका आभा-मंडल बढ़ जाता है। संविधान का अनुच्छेद ४८ निम्नवत् हैः-

Organisation of agriculture and animal husbandry. The state shall endeavour to organize agriculture and animal husbandry on modern and scientific lines and shall in particular take step for preserving and improving the breeds, and prohibiting the slaughter of cows and calves and other milch and draught cattle.

दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, गुजरात, मध्यप्रदेश, झारखण्ड, राजस्थान, छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, उत्तराखण्ड आदि राज्यों में गोवंशीय पशुओं का वध पूर्णतया प्रतिबंधित है तथा गोमांस रखना, खरीदना, बेचना व परिवहन

करना भी दंडनीय अपराध है। अन्य राज्यों में गोवंशीय पशुओं के वध पर आंशिक प्रतिबन्ध है। इन राज्यों के कानून को मांस निर्यातकों ने भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ाते हुए इन राज्यों में गोवंश वध, गोमांस उत्पादन तथा वहाँ के अधिकारियों से भैंस का मांस होने के प्रमाण पत्र लेकर गोमांस निर्यात का धंधा जोरों से चला रखा है।

केन्द्रीय कृषि मंत्रालय के पशुपालन व डेयरिंग विभाग के पशुधन विकास स्टेटिस्टिक्स निदेशालय की टेक्नीकल कमेटी तथा राष्ट्र संघ की फूड एग्रीकल्चर ओर्गानाइजेशन (FAO) की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष २००३ में भारत में गोमांस (Beef & Veal) का उत्पादन १४६०००० मि. टन था। २०११ में इसकी मात्रा १७००००० मि. टन अनुमानित है। चेप्टर १२ में दर्शायी गयी मात्रा ५४५७३ टन जान बूझकर कम दिखायी गई प्रतीत होती है। **१७००००० मि. टन गोमांस का उत्पादन दो करोड़ से अधिक गाय, बैल व बछिया-बछड़ों का कत्ल करने से हो सकता है।** चालू वर्ष में यह मात्रा और भी बढ़ेगी। केन्द्र सरकार मांस निर्यात पर ३० प्रतिशत सब्सीडी व अन्य लाभ दे रही है। **सिविल अपील नं.३९९४-९७ ,३९९८/१९९४ अखिल भारत कृषि गोसेवा संघ व अन्य बनाम आन्ध्र प्रदेश पोल्यूशन कन्ट्रोल बोर्ड (अल कबीर कत्लखाना केस के नाम से विख्यात) वाद के निर्णय दिनांक २९.३.२००६ के पेरा ६७(८) में माननीय उच्चतम न्यायालय की सात सदस्यीय पीठ ने केन्द्र सरकार को मांस निर्यात नीति का पुनरीक्षण करने हेतु निर्देश दिया था जो निम्नवत् हैः-**

"Finally, The Central Govt. is directed to review the meat export policy, in the light of the Directive Principles of state policy under the constitution of india and also in the light of the policy's potentially harmful effects on livestock population, and therefore on the economy of the country. इसमें माननीय सुप्रीम कोर्ट का संकेत संविधान के अनुच्छेद ४८ की ओर है। अनुच्छेद ४८ में निहित शब्दावली Cow and calves and other milch and draught cattle" की व्याख्या माननीय सुप्रीम कोर्ट ने State of Gujrat & other VS Mirzapur Moti Qureshi Kassab jamat & others में दिये गये निर्णय दिनांक २६.१०.२००५ में करते हुए व्यवस्था दी है कि प्रत्येक गोवंशीय पशु अपने जीवन के अंतिम दिन तक गोबर व गोमूत्र तो देता ही है जो कृषि तथा बायोगैस उत्पादन के लिए बहुत ही उपयोगी है,अतएव **गुजरात सरकार द्वारा १६ वर्ष से अधिक आयु के बैल व सांड के वध पर लगायी गई रोक संवैधानिक है,**किन्तु भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के वाणिज्य विभाग ने अपने Office Mrmorandum F.No. ३/८/२००६ EP(Agri III) दिनांक ३/५/२००७ में अपनी आख्या द्वारा उपर्युक्त निर्देश की अवज्ञा तथा माननीय उच्चतम न्यायालय की अवमानना की है। आख्या निम्नवत् हैः-

"The present export policy permits only of meat from buffaloes that are certified as not useful for milching breeding or draught purpose. Through the Hon'ble Apex court has interpreted the word milch and draught cattle to include even those cattle which are past their prime. The Supreme Court has still not chosen to strike down the current policy. After taking into account all aspects of this issue, it does not appear to be necessary to revise the current meat policy" The Govt. has therefore, decided that the current Meat Export Policy needs no change. This issues in compliance of the order of the Hon. Supreme Court of India in the judgement of civil Appeal No. 3968 of 1994 with (C.A. Nos. 3965/94,3966/3967/94) filed in Superme Court of India,New Delhi.

वस्तुस्थिति यह है कि पशुपालन विभाग के सम्बद्ध अधिकारियों से गोमांस को ही भैंस का मांस प्रमाणित कराके गामांस का निर्यात किया जा रहा है। जहाँ से गोमांस का लदान होता है वहाँ पर उस मांस के परीक्षण की कोई व्यवस्था नहीं होती है और न ही मार्ग में उसके परीक्षण के लिए कोई लैब है। पोर्ट पर भी सम्बद्ध अधिकारियों तथा मांस निर्यातकों की सांठगांठ रहती है। गुजरात में उत्तर प्रदेश व दिल्ली से मुम्बई पोर्ट को जाते हुए मांस से लदे हुए कन्टेनर्स को रोक कर उनमें परिवहित मांस का परीक्षण कराया गया । संबंधित अधिकारियों द्वारा उसे भैंस का मांस होना प्रमाणित किया था, किन्तु परीक्षण में वह गोमांस प्रमाणित हुआ तथा मांस निर्यातकों के विरुद्ध एफ.आई.आर. दर्ज करायी गई। इससे मांस निर्यातकों में खलबली मचना स्वाभाविक है। उन्होंने योजना आयोग पर अपने प्रभाव का प्रयोग कर बारहवीं पंचवर्षीय योजना में गोमांस के निर्यात से प्रतिबंध हटाने,मांस निर्यात बढ़ाने तथा नए कत्लखाने स्थापित कराने की संस्तुति कराई है।

उल्लेखनीय है कि केन्द्रीय कोयला मंत्री माननीय श्री प्रकाश जायसवाल ने हाल ही में माननीय प्रधानमंत्री जी से भेंट कर मांस

निर्यात पर रोक लगाने हेतु अनुरोध किया था और कहा था कि मुस्लिम समुदाय भी मांस निर्यात पर रोक लगवाना चाहता है। माननीय प्रधानमंत्री जी उन्हें तदर्थ आश्वासन दिया था। यह समाचार 'दैनिक जागरण' के संस्करण दिनांक ६.८.२०१० में प्रकाशित हुआ था,किन्तु मांस निर्यातकों के दबाव के कारण अभी तक मांस निर्यात बंद करना तो दूर,उसमें कमी भी नहीं की गई। उसे निरन्तर बढ़ाया जा रहा है। मांस निर्यात मोटे मुनाफे का धंधा होने के कारण मांस निर्यात के लिए देश में कत्लखानों की बाढ़ आ गई है। गोमांस भक्षक अंग्रेज तो हमारा परस्पर सौहार्द,उन्नत कृषि तथा समृद्धि को नष्ट करके हमें हजारों वर्ष तक गुलाम बनाए रखने के लिए अपने शासन काल में भारत में ३०० कारखाने ही स्थापित कर सके थे, किन्तु स्वाधीन भारत की सरकार ने तो ३८६४ लाइसेन्सशुदा तथा लगभग ४०००० कत्लखाने बिना लाइसेन्स के ही चलाने,रात-दिन भारत के गोवंश/पशुधन को नष्ट करते हुए मृदा,जल तथा वायु को प्रदूषित करने की छूट दे रखी है। योजना के चेप्टर १२ में बिना लाइसेन्स चल रहे कत्लखानों की संख्या जानबूझ कर कम २५७५४ दर्शायी गई है।

मांस निर्यातक केन्द्र सरकार व योजना आयोग पर इतने हावी हैं कि कारखानों से होने वाली निम्न वर्णित हानियों व दुष्परिणामों की ओर से सरकार व योजना आयोग अपनी आँखें मूँदे हुए है।

कत्लखानों से हानियाँ -

१. **पीने के पानी की बर्बादी** - मनुष्यों के लिए पीने के पानी की कमी है लेकिन एक किलो मांस तैयार करने में २०००० लीटर से ज्यादा पानी, एक हेम बर्गर बनाने में ७६५ लीटर पानी,एक शहरी बूचड़खाने में रोजाना १५-२० लाख लीटर पीने का पानी बर्बाद किया जाता है।

२. **जल प्रदूषण** - कत्लखानों के अवशेष,खून व अन्य हानिकारक द्रव्य से प्रदूषित पानी भूमिगत जलस्रोतों, नदियों, झीलों व समुद्र में जाकर उनके जल को भी प्रदूषित करता है।

३. **वायु प्रदूषण** - कत्लखानों से तथा कत्लखानों के अवशेषों से निकलने वाली दुर्गन्ध वायु को प्रदूषित करती है।

४. **मृदा प्रदूषण** - कत्लखानों का प्रदूषित पानी जिस जमीन पर होकर जाता है अथवा फैलता है उसकी मिट्टी बर्बाद हो जाती है।

५. **मांस-भक्षण स्वास्थ्य के लिए हानिकारक** - कृषि में कैमिकल फर्टीलाइजर व कीटनाशकों के प्रयोग से पैदा किए हुए पशु चारे के अंश पशुओं के मांस तथा वसा में जमा होते रहते हैं जो उसे खाने वालों के स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाते हैं। जिगर तिल्ली,गुर्दे तथा हृदय/दिल की बीमारियाँ पैदा करते हैं,मोटापा बढ़ाते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार १६० प्रकार की बीमारियाँ मांस खाने से होती हैं।

६. **मांस-भक्षण से हिंसा तथा अपराध की वृत्ति का निर्माण** - मांस का उत्पादन निरीह पशुओं की निर्मम हत्या करके होता है। उसका भक्षण करने वाले मनुष्यों के अंदर हिंसा,क्रूरता तथा अपराध की वृत्ति का निर्माण होता है। सरकार मांस भक्षण को प्रोत्साहन दे रही है। उसने इसी उद्देश्य से 'नेशनल मीट एंड पोल्ट्री डेवलपमेन्ट बोर्ड' का गठन किया है। मांस- भक्षण करने वाले शराब पीते हैं जिससे उनकी बुद्धि का सन्तुलन बिगड़ जाता है और वे अपराध करने के लिए प्रवृत्त होते हैं।

७. **दूध के अभाव में प्रतिदिन ५००० बच्चों की अकाल मृत्यु** - गाय व भैंस काटे जाने से समाज उस दूध से वंचित हो जाता है जो उसके शेष जीवन काल में उससे मिलता है। यूनेस्को की वर्ल्ड चिल्डर्न स्टेटस रिपोर्ट २००८ के अनुसार भारत में ५००० बच्चे प्रतिदिन चार वर्ष की आयु पूरी करने से पूर्व ही कुपोषण व बीमारी का शिकार होकर मर जाते हैं। इससे

अधिक आयु के बच्चों,महिलाओं व पुरुषों की संख्या इससे कहीं अधिक है।

८. **समाज पशु-श्रम शक्ति से वंचित** - बैलों के काटे जाने से समाज उसकी उस श्रमशक्ति से वंचित हो जाता है जो उनके शेष जीवन काल में कृषि व परिवहन आदि के लिए मिलती। ट्रेक्टर से खेती महगी,प्रदूषणकारी तथा परावलम्बी है। किसानों को ट्रेक्टर खरीद के लिए ऋण लेना पड़ता है जिसकी किश्तें जमा न कर पाने पर उसकी भूमि नीलाम हो जाती है। ऋण तथा गरीबी से त्रस्त होकर भारत के २.५ लाख किसान आत्महत्या करने के लिए विवश हुए हैं। किसानों की संतति ग्रामों से शहरों की ओर पलायन कर रही है। वहाँ पर मलिन बस्तियों में रहकर रोजगार की तलाश करती है। रोजगार न मिलने पर अपराध जगत में जाने के लिए विवश होती है।

९. **कृषि तथा ऊर्जा के लिए गोबर गोमूत्र की कमी** - गोवंशीय पशुओं को काटे जाने से समाज उनके उस गोबर व गोमूत्र से वंचित हो जाता है जो उनके शेष जीवन काल में पर्यावरण रक्षक,रोजगार मूलक,स्वावलम्बी,कम लागत से अधिक गुणवत्तापूर्ण उत्पाद देने वाली,स्थायी जैविक कृषि तथा गोबर गैस संयंत्रों से ऊर्जा उत्पादन के लिए मिलता । कृषि में कैमीकल फर्टिलाइजर व पेस्टीसाइड के प्रयोग से कृषि उत्पादन की लागत कई गुना हो गई है। भूमि बंजर तथा कृषि उत्पाद विषैले हो गए हैं जिन्हें खाकर हम, हमारे पशु-पक्षी सभी बीमार हैं।

१०. **आशीषों/दुआओं की जगह श्राप/बद्दुआएँ** - गोवंशीय पशुओं को काटे जाने से समाज उनके उन आशीषों/दुआओं से वंचित हो जाता है जो उनके शेष जीवन काल में मनोकामनाओं की पूर्ति तथा जीवन का परम लक्ष्य भगवान की प्राप्ति के लिए मिलती हैं। इसके विपरीत उनका श्राप/बद्दुआऐं मिलती हैं जो विनाशकारी होती हैं।

११. **पशुओं के सामूहिक संहार से भूकम्प, सुनामी व समुद्री तूफान आदि प्राकृतिक आपदाएँ** - दिल्ली विश्वविद्यालय के भौतिकी/खगोल-भौतिकी के रीडर डॉ.मदन मोहन बजाज और उनके साथी डॉ. इब्राहिम एवं डॉ. विजयराज सिंह ने आइस्टीन पेन वेव्स (ई.पी.डब्ल्यू) या नोसीपेप्शन वेव्स के सिद्धान्त के आधार पर सिद्ध किया है कि एक कत्लखाने से जो ई.पी.डब्ल्यू.निकलती है उनकी ऊर्जा १०४० मेगावाट से अधिक होती है। उन्होंने मैथेमेटिकल माडल्स/वेव्स इन्टरएक्शन आफ ई.पी.डब्ल्यू. तथा फिजिक्स एक्सपेरिमेन्ट्स के आधार पर कहा है कि **यदि आप चाहते हैं कि भूकम्प व सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाएँ न आवें तो निरीह प्राणियों की हत्या बंद करिये।**

क्या मांस निर्यात तथा उसके लिए स्थापित कत्लखानों में दिन रात लाखों निरीह गोवंशीय व अन्य पशुओं का वध किया जाना जनहित में है?क्या वह घाटे का धंधा है?फिर उस पर सब्सीडी तथा आयात संबंधी सुविधाएँ क्यों प्रदान की जा रही हैं?

दुःखद आश्चर्य है कि सरकार ने निरीह मूक पशुओं का कत्ल करके तैयार किए गए मांस व उसके उत्पादों को कृषि उत्पादन की संज्ञा दी हुई है तथा मांस निर्यात को Agricultural product Export Development Authority (APEDA) के अंतर्गत रखा हुआ है।

महर्षि दयानन्द, योगीराज कृष्ण, महावीर, महात्मा बुद्ध, महात्मा गाँधी के इस अहिंसा प्रधान देश में प्रतिवर्ष करोड़ों निरीह पशुओं का वध तथा उनके मांस का निर्यात इस देश की सरकार तथा नागरिकों के लिए अत्यन्त शर्मनाक है तथा मन उद्वेलित करने वाला है।

यदि देश के प्रबुद्ध एवं संवेदनशील नागरिक क्षुब्ध होकर संविधान के अनुच्छेद ५१ A(1)(g) में प्रावधानिक पर्यावरण की रक्षा व उसमें सुधार तथा प्राणियों के प्रति करुणा का भाव रखने के अपने मौलिक कर्तव्य के अनुपालनार्थ हर स्तर पर इस नृशंस अपराध के विरुद्ध संघर्ष के लिए निकल पड़ें तो सरकार की बहुत किरकिरी होगी।

आपसे सादर अनुरोध है कि बारहवीं पंचवर्षीय योजना के प्रारूप में गोमांस निर्यात पर प्रतिबंध हटाने,मांस निर्यात बढ़ाने,नये कत्लखाने स्थापित कराने तथा पुराने कत्लखानों की वध क्षमता बढ़ाने की संस्तुति निरस्त की जाय तथा ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में ५०० यांत्रिक कत्लखाने ग्रामीण आँचल में तथा ५० निर्यातपरक अत्याधुनिक कत्लखाने स्थापित कराने हेतु निर्धारित क्रमशः २५०० करोड़ रु. तथा १००० करोड़ रु. में से **अब तक निवेश न की गई राशि देसी प्रजाति के गोवंश संवर्धन एवं विकास हेतु राष्ट्रीय गोवंश विकास बोर्ड स्थापित कर उसे प्रदान की जाय**। उल्लेखनीय है कि जनता के भारी विरोध के कारण उपर्युक्त ५५० कत्लखानों में से अभी तक १० प्रतिशत अर्थात् ५५ कत्लखाने भी स्थापित नहीं हो सके हैं।

- इंजीनियर रामेश्वर दयालु गुप्त
प्रधान आर्य समाज दयानन्द नगर,गाजियाबाद

❑❑❑

गृहस्थ और नारी महिमा

– प्रो.चन्द्रप्रकाश आर्य

गृहस्थ की धुरी-माँ को समर्पित

'वह कुल धन्य! वह सन्तान बड़ा भाग्यवान् ! जिसके माता और पिता, धार्मिक विद्वान् हों। जितना माता से सन्तानों को उपदेश और उपकार पहुँचता है उतना किसी से नहीं। जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उनका हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता। इसलिए (मातृमान्) अर्थात् 'प्रशस्ता धार्मिकी विदुषी माता विद्यते यस्य सः मातृमान्' धन्य वह माता है कि जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो तब तक सुशीलता का उपदेश करे'

-महर्षि दयानन्द

सत्यार्थ प्रकाश के चौदह समुल्लासों में वेदादि शास्त्रों की सर्व हितकारी शिक्षाओं का प्रतिपादन है। इसके ११-१४ समुल्लासों में संसार के विभिन्न मतों एवं धर्मों का संक्षिप्त समीक्षात्मक परिचय दिया गया है। सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द ने चौथा समुल्लास विवाह एवं गृहस्थ धर्म के बारे में भी लिखा है। वेदों के अनुसार ब्रह्मचर्य से युवावस्था को प्राप्त स्त्री पुरुष का विवाह होना चाहिए,बाल्यावस्था में नहीं (सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ ८४-८५)।

आगे मनुस्मृति के श्लोक उद्धृत करके कहा है कि जहाँ पति पत्नी से सन्तुष्ट हो तथा पत्नी पति से सन्तुष्ट हो/है, उस परिवार में नित्य ही कल्याण रहता है। स्त्री के प्रसन्न व सुखी रहने पर सारा परिवार प्रसन्न रहता है और उसके अप्रसन्न रहने पर परिवार में कुछ भी अच्छा नहीं लगता, रोचक नहीं बनता इसलिए नानाविध कल्याण चाहने वाले पिता, भ्राता, पति, देवर आदि द्वारा स्त्रियों का सम्मान करना चाहिए एवं इनको वस्त्र अलंकार आदि से आभूषित करना चाहिए। जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं जहाँ स्त्रियों की पूजा, सत्कार नहीं होता वहाँ सारी क्रिया निष्फल हो जाती है। जहाँ नारियाँ शोक नहीं करतीं, सन्तप्त, पीड़ित रहती हैं वह कुल शीघ्र नष्ट हो जाता है। जहाँ नारियाँ शोक नहीं करतीं वह कुल/परिवार सदा बढ़ता/उन्नत होता है। (सत्यार्थ प्रकाश पृ. ६५-६६)। आगे गृहस्थ में सबके हितार्थ पाँच महायज्ञों का विधान किया है। (सत्यार्थ प्रकाश पृ. ६८-११०)

समुल्लास के अंत में गृहस्थाश्रम की महिमा बताते हुए मनुस्मृति के श्लोक पठनीय एवं स्मरणीय हैं -

१.जैसे सारे नदी नाले सागर में मिलते हैं उसी प्रकार सभी आश्रमों के लोग गृहस्थ पर संस्थित (based) हैं ।

२. जैसे वायु का सहारा लेकर सब प्राणी जीते हैं उसी प्रकार सब प्राणी गृहस्थ पर आश्रित हैं।

३. ब्रह्मचर्य आदि बाकी तीनों आश्रम दान,अन्नादि से गृहस्थ द्वारा ही धारण किए जाते हैं अतः गृहस्थाश्रम ज्येष्ठतम् सबसे बड़ा है। (पृ. १२२)। अतः अक्षय स्वर्ग+सुख चाहने वाले मनुष्य को बड़े प्रयत्न से गृहस्थाश्रम धारण करना चाहिए। दुर्बलेन्द्रिय क्षीण शरीर वाले व्यक्ति के लिए यह धारण करने योग्य नहीं (पृष्ठ १२२) ।अन्त में दयानन्द के शब्दों में-जो कोई गृहस्थाश्रम की निन्दा करता है वही निन्दनीय है और जो प्रशंसा करता है वही प्रशंसनीय है परन्तु गृहस्थाश्रम में तभी सुख होता है जब स्त्री और पुरुष दोनों परस्पर प्रसन्न, विद्वान्, पुरुषार्थी और सब प्रकार के व्यवहारों के ज्ञाता हों (पृ. १२३)

(संदर्भ-सत्यार्थप्रकाश-महर्षि दयानन्द) प्रकाशक-श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर संस्करण २०१०।

❑❑❑ ४३२ आर्य निवास, करनाल १३२००१

स्वास्थ्य

तरबूज गर्मियों के मौसम में होने वाला फल है। तरबूज का फल आकार में गोलाकार/अण्डाकार होता है। यह काफी भारी होता है। तरबूज में बीज पाए जाते हैं। इसे खाते समय इसके बीजों को निकाल देना चाहिए। गर्मियों के मौसम में इसके सेवन करने से प्यास शांत होती है। शरीर में गर्मी के प्रभाव को दूर करने के लिए इसका सेवन करना अधिक लाभदायक होता है। इसका अधिक मात्रा में सेवन करने से शरीर में शिथिलता आ जाती है इस कारण कुछ लोग इसे अक्ल यानि बुद्धि को नष्ट करने वाला मानते हैं। भोजन करने के एक घंटे बाद इसका सेवन करना लाभकारी होता है। जिन व्यक्तियों को कब्ज की शिकायत रहती है, उनके लिए तरबूज का सेवन करना अच्छा रहता है, क्योंकि इसके खाने से आँतों को एक प्रकार की चिकनाई मिलती है। इसका सेवन उक्त रक्तचाप को बढ़ने से भी रोकता है।

खाना खाने के उपरांत तरबूज का रस पीने से भोजन शीघ्र पच जाता है। इससे नींद भी अच्छी आती है। इसके रस से लू लगने का अंदेशा भी नहीं रहता। मोटापा कम करने वालों के लिए यह उत्तम आहार है। पोलियो रोगियों को तरबूज का सेवन करना बहुत लाभकारी रहता है, क्योंकि यह खून को बढ़ाता है और उसे साफ भी करता है। त्वचा रोगों में भी यह फायदेमंद है। तपती गर्मी में जब सिरदर्द होने लगे तो तरबूज के आधा गिलास रस को मिश्री मिलाकर पीना चाहिए।

पेशाब में जलन हो तो ओस या बर्फ में रखे हुए तरबूज का रस निकालकर सुबह शक्कर मिलाकर पीने से लाभ होता है। गर्मी में नित्य तरबूज का ठंडा-ठंडा शरबत पीने से शरीर को शीतलता तो मिलती ही है, चेहरे पर गुलाबी-गुलाबी आभा भी दमकने लगती है। इसके लाल गूदेदार छिल्कों को हाथ-पैर, गर्दन व चेहरे पर रगड़ने से सौंदर्य निखरता है। सूखी खाँसी में तरबूज खाने से खाँसी का बार-बार चलना बंद होता है।

तरबूज की फाँकों पर कालीमिर्च पावडर, सेंधा व काला नमक बुरककर खाने से खट्टी डकारें आना बंद होती हैं। धूप में चलने से ज्वर आया तो फ्रिज का ठंडा-ठंडा तरबूज खाने से फायदा होता है। तरबूज का गूदा लें और इसे "Black heads" के प्रभावित एरिया पर आहिस्ता-आहिस्ता रगड़ें। १५ मिनट उपरांत चेहरे को गुनगुने पानी से साफ कर लें।

अपचन, भूख बढ़ाने तथा खून की कमी में यह प्रयोग काम में लाएँ। एक बड़े तरबूज में थोड़ा-सा छेद करके २०० ग्राम चीनी भर दें। ३-४ दिन तक उस तरबूज को दिन में धूप में तथा रात में चन्द्रमा की रोशनी में रखें। उसके बाद अंदर से पानी निचोड़ लें और छानकर काँच की साफ बोतल में भर लें। यह तरल पदार्थ चौथाई कप की मात्रा में दिन में दो से तीन मर्तबा पीने से उपरोक्त तकलीफों में अत्यंत लाभ होता है। पागलपन, दिमागी गर्मी, हिस्टीरिया, अनिद्रा रोगों में तरबूज का गूदा ४० मिनट के लिए सिर पर रखना फायदेमंद होता है। तरबूज में विटामिन ए, बी, सी तथा लोहा भी प्रचुर मात्रा में मिलता है, जिससे रक्त सुर्ख व शुद्ध होता है। ❑❑❑

मौत जिन्दगी से कितनी बेहतर है

जिन्दा थे तो किसी ने पास बिठाया नहीं,
अब खुद मेरे चारों ओर बैठे जा रहे हैं।

पहले कभी किसी ने मेरा हाल पूछा नहीं,
अब सभी आँसू बहाए जा रहे हैं।

एक रुमाल भी भेंट नहीं किया, जब हम जिन्दा थे,
अब शॉलें और कपड़े ऊपर से ओढ़ाए जा रहे हैं।

सब को पता है शॉलें और कपड़े इसके काम के नहीं,
मगर फिर भी बेचारे, दुनियादारी निभाए जा रहे हैं।

कभी किसी ने एक वक्त का खाना तक नहीं खिलाया,
अब देशी घी मेरे मुँह में डाले जा रहे हैं।

जिन्दगी में एक कदम भी साथ न चल सका कोई,
अब फूलों से सजाकर, कन्धों पर उठाये जा रहे हैं।

प्रस्तुति - कमला शंकर शर्मा

बाल वाटिका

बहुत समय पहले की बात है। एक गाँव में राधा नाम की एक औरत रहती थी। राधा बहुत ही समझदार थी। उसके पास एक भेड़ थी। भेड़ जो दूध देती, राधा उसमें से कुछ दूध बचा लेती। उस दूध से वह दही जमाती। दही से मक्खन निकाल लेती। छाछ तो वह पी लेती, लेकिन मक्खन से घी निकाल लेती। उस घी को राधा एक मटकी में डाल लेती। धीरे-धीरे मटकी घी से भर गई। राधा ने सोचा, अगर घी को नगर में जा कर बेचा जाए तो काफी पैसे मिल जाएंगे। इन पैसों से वह घर की जरूरत का कुछ सामान खरीद सकती है। इसलिए वह घी की मटकी सिर पर उठा कर नगर की ओर चल पड़ी।

उन दिनों आवाजाही के अधिक साधन नहीं थे। लोग अधिकतर पैदल ही सफर करते थे। रास्ता बहुत लम्बा था। गरमी भी बहुत थी। इसलिए राधा जल्दी ही थक गई। उसने सोचा, थोड़ा आराम कर लूँ। आराम करने के लिए वह एक वृक्ष के नीचे बैठ गई। घी की मटकी उसने एक तरफ रख दी। वृक्ष की शीतल छाया में बैठते ही राधा को नींद आ गई। जब उसकी आँख खुली तो उसने देखा, घी की मटकी वहाँ नहीं थी। उसने घबरा कर इधर-उधर देखा। उसे थोड़ी दूर पर ही एक औरत अपने सिर पर मटकी लिये जाती दिखाई दी। वह उस औरत के पीछे भागी। उस औरत के पास पहुँच राधा ने अपनी मटकी झट पहचान ली।

राधा ने उस औरत से अपनी घी की मटकी माँगी। वह औरत बोली, ''यह मटकी तो मेरी है, तुम्हें क्यों दूँ?'' राधा ने बहुत विनती की, परंतु उस औरत पर कुछ असर न हुआ। उसने राधा की एक न सुनी। राधा उसके साथ-साथ चलती नगर पहुँच गई। नगर में पहुँच कर राधा ने मटकी के लिए बहुत शोर मचाया। शोर सुनकर लोग एकत्र हो गए। लोगों ने जब पूछा तो उस औरत ने घी की मटकी को अपना बताया। लोग निर्णय नहीं कर पाए कि वास्तव में मटकी किसकी है। इसलिए वे उन दोनों को हाकिम की कचहरी में ले गए।

राधा ने हाकिम से कहा, ''हुजूर! इस औरत ने मेरी घी की मटकी चुरा ली है। मुझे वापस नहीं कर रही। कृपया इससे मुझे मेरी मटकी दिला दें। मुझे यह घी बेचकर घर के लिए जरूरी सामान खरीदना है।'' ''तुम्हारे पास यह घी कहाँ से आया ?और इसने कैसे चुरा लिया ?'' हाकिम ने पूछा। ''मेरे पास एक भेड़ है। उसी के दूध से मैने यह घी जमा किया है। रास्ते में आराम करने के लिए मैं एक वृक्ष की छाया में बैठी तो मुझे नींद आ गई। तभी यह औरत मेरी मटकी उठा कर चलती बनी।'' हाकिम ने उस औरत से पूछा तो वह बोली, ''हुजूर, आप ठीक-ठीक न्याय करें। मैने पिछले माह ही एक गाय खरीदी है, जो बहुत दूध देती है। मैने यह घी अपनी गाय के दूध से ही तैयार किया है। जरा सोचिए, एक भेड़ रखने वाली औरत एक मटकी घी कैसे जमा कर सकती है?''

हाकिम भी दोनों की बातें सुनकर दुविधा में पड़ गया। वह भी निर्णय नहीं कर पा रहा था कि वास्तव में घी की मटकी किसकी है। उसने दोनों औरतों से पूछा, ''क्या तुम्हारे पास कोई सबूत है ?'' दोनों ने कहा कि उनके पास कोई सबूत नहीं है।'' तब हाकिम को एक उपाय सूझा। उसने दोनों औरतों से कहा, ''वर्षा के पानी से कचहरी के सामने जो कीचड़ जमा हो गया है, उसमें मेरे बेटे का एक जूता रह गया है। तुम पहले वह जूता निकाल कर लाओ, फिर मैं फैसला करूँगा।'' राधा और वह औरत कीचड़ में घुस कर जूता ढूँढ़ने लगीं। वे बहुत देर तक कीचड़ में हाथ-पाँव मारती रहीं, परंतु उन्हें जूता नहीं मिला। तब हाकिम ने उन्हें वापस आ जाने को कहा। दोनों कीचड़ में लथपथ हो गईं थीं। हाकिम ने चपरासी से उन्हें एक-एक लोटा पानी देने को कहा, ताकि वे हाथ-पाँव धोकर कचहरी में हाजिर हो सकें। दोनों को एक-एक लोटा पानी दे दिया गया। राधा ने तो उस एक लोटा पानी में से ही अपने हाथ-पाँव धोकर थोड़ा-सा पानी बचा लिया। परंतु गाय वाली वह औरत एक लोटा पानी से हाथ भी साफ नहीं कर पाई। उसने कहा, ''इतने पानी से क्या होता है! मुझे तो एक बाल्टी पानी दो, ताकि मैं ठीक से हाथ-पाँव धो सकूँ।'' हाकिम के आदेश से उसे और पानी दे दिया गया।

हाथ-पाँव धोने के बाद जब राधा उस औरत के साथ कचहरी में पहुँची तो हाकिम ने फैसला सुना दिया, ''घी की यह मटकी भेड़ वाली औरत की है। गाय वाली औरत जबरन इस पर अपना अधिकार जमा रही है।''

सब लोग हाकिम के न्याय से बहुत खुश हुए क्योंकि उन्होंने स्वयं देख लिया था कि भेड़ वाली औरत ने कितने संयम से सिर्फ एक लोटा पानी से ही हाथ-पाँव धो लिए थे। गाय वाली औरत में संयम नाम मात्र को भी नहीं था। वह भला घी कैसे जमा कर सकती थी।

❑❑❑

- श्याम सुन्दर अग्रवाल

डॉ. प्रियव्रत दास को सर्वोच्च ओडिआ साहित्य पुरस्कार

विगत छः दशकों से ओडिआ भाषा में वेद, उपनिषद, दर्शन, स्मृति, कर्मकाण्ड आदि पचास से ऊपर पुस्तकों के प्रणेता आर्य विद्वान् डॉ. प्रियव्रतदास को ओडिआ साहित्य का सम्मानजनक 'महापुरुष जगन्नाथ दास सम्मान' से सम्मानित किया गया है। एक लाख रुपये की सम्मान राशि सहित मानपत्र, शाल आदि प्रदान किया गया।

-ब्रजवन्धु पंडा, भुवनेश्वर

श्री गुरु विरजानन्द गुरुकुल महाविद्यालय, करतारपुर में प्रवेश प्रारम्भ

तिथि- १० जून २०१२, प्रवेश परीक्षा- १० से ०१ बजे तक
प्रवेश केवल छठी कक्षा में

सम्पर्क- भूषण लाल शर्मा, प्राचार्य, ०१८१-२७८२२५२, २७८२२४६

स्वामी प्रवासानंद सरस्वती 'संकल्पानंद पुरस्कार' से सम्मानित

वर्ष २०१२। ऋषि बोधोत्सव टंकारा में मुंबई आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रदत्त प्रतिवर्ष दिया जाने वाला संकल्पानंद पुरस्कार जिसमें १५००० पन्द्रह हजार रु. शाल, प्रतीक चिह्न शामिल हैं, श्री अरुण अब्रोल जी के सान्निध्य में, गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के हस्ते सम्मान सहित, दिनाङ्क २०.०२.२०१२ के दिन, आर्यजनों, जो देश-विदेश से पधारे थे की उपस्थिति में, प्रदान किया गया।

-वेद मंदिर, सायला, सुरेन्द्रनगर, गुजरात

गुगनराम सोसायटी (रजि.) बोहल, जिला भिवानी (हरियाणा)

आर्य समाज में अनुसंधान, लेखन और प्रकाशन की परम्परा को प्रगति देने के उद्देश्य से स्वर्गीय चौधरी गुगनराम सिहाग व उनकी बहन स्व. गिना देवी की पावन स्मृति में दो साहित्य पुरस्कार प्रारम्भ किये गये। वर्ष २००६ के लिए श्रीमती गिना देवी स्मृति साहित्य पुरस्कार हेतु महात्मा चैतन्यमुनि जी की पुस्तक ''निराले गुरु-शिष्य'' व श्री रामदेव आर्य, बोहल जिला रोहतक की पुस्तक ''जीने की राह-प्रथम भाग'' को वर्ष २०११ के लिए चुना। वर्ष २०११ के लिए डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा की लघु नाटिका संग्रह ''अनन्त की ओर'' व श्री ताराचन्द्र आहूजा की पुस्तक ''चेतना के स्वर'' को चुना है। संस्था की ओर से इन विद्वानों को ११००/- (ग्यारह सौ रुपये) के चैक व एक-एक प्रशस्ति पत्र दिया जायेगा।

- नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट हरियाणा

सुयोग्य अधिष्ठाता की आवश्यकता

दयानन्द बाल सदन (अनाथालय) अजमेर के लिए एक सुयोग्य, सक्षम, आर्य विद्वान् , अधिष्ठाता की आवश्यकता है। गुरुकुल स्नातक एवं अनुभवी को वरीयता। वैदिक धर्म एवं आर्य समाज के प्रति समर्पित मिशनरी भावना से ओतप्रोत। आयु ४५-५० के बीच को प्राथमिकता वेतन योग्यतानुसार। आवास सुविधा निःशुल्क उपलब्ध। शीघ्र ही निम्न पते पर प्रार्थना पत्र आवश्यक प्रमाण-पत्रों सहित भिजवायें।

– मंत्री, दयानन्द बाल सदन, अजमेर

आर्य पुत्री हेतु योग्य वर की अभिलाषा

डॉ. तारा सिंह आर्य, प्राकृतिक चिकित्सक (वर्ण-कुशवाह क्षत्रिय) की पुत्री कु. शन्नो आर्य (गौर वर्ण, ५ फिट ४ इंच, जन्म तिथि-२१.०३.८३, २००३ से न्यूरोपेथ परामर्शदाता, निष्ठावान् आर्य परिवार, पुत्री स्वयं दैनिक संध्या व यज्ञ करने वाली, पूरा परिवार उच्च शिक्षित व प्रतिष्ठित। जातिबन्धन नहीं।

आनन्द सरिता, ००४ ए सेक्टर-७, शक्तिनगर, मीरी रोड़, मुम्बई- ०२२-२८१२७६४०, ०९२२४२८२१६४

के.पी. महेश्वरी को सम्मानित किया

डी.ए.वी. इन्टर कॉलेज, बुलन्दशहर के पूर्व प्रधानाचार्य, माहेश्वरी सेवक समाज के अध्यक्ष, चमेली देवी बालिका विद्यालय के प्रबन्धक व मंगलाकरम् धर्मार्थ समिति के सदस्य श्री कैलाशपति माहेश्वरी जी की ६६वीं जन्म वर्षगांठ पर सावरकरवाद प्रचार सभा की ओर से इन्द्रदेव गुलाटी व ब्रजेश कुमार गर्ग आदि ने माल्यार्पण कर अभिनन्दन किया तथा साहित्य व अभिनन्दन पत्र भेंट किया।

-इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

पिता के अनुव्रती बन आर्य समाज के माध्यम से समाज सेवा में संलग्न पुत्र

आर्य जगत्, हाड़ौती क्षेत्र के सुदृढ़ स्तम्भ स्व. श्री कृष्ण साधक का तप फलीभूत हो रहा है। उनके सुयोग्य पुत्र भ्राता डॉ. वेदप्रकाश गुप्ता अपनी सहधर्मिणी डॉ. सरोज गुप्ता के साथ तन-मन-धन से माँ आर्य समाज की सेवा में संलग्न हैं। एतदर्थ भाई वेद प्रकाश जी को बधाई। श्री अर्जुन देव चढ्डा प्रधान, जिला सभा कोटा, श्री अरविन्द पाण्डेय, श्री राम प्रसाद याज्ञिक आदि साथियों का साधुवाद।

- आर्य जिला सभा, कोटा

पाठक ध्यान रखें

हम गत दिनों दिल्ली से वापस ट्रेन से आ रहे थे। एक सज्जन के साथ ऐसा हुआ कि उन्होंने जिस पहचान पत्र को आरक्षण स्लिप में भरा उसकी फोटो-स्टेट उनके पास थी पर मूल प्रमाण-पत्र न था। यद्यपि उनके पास अन्य २-३ मूल पहचान-पत्र थे पर वे मान्य नहीं थे। टी.सी महोदय ने उन्हें बिना टिकट माना तथा पूरे किराए की वसूली की। रेल विभाग द्वारा आरक्षण के नये नियमानुसार यात्री के पास वही पहचान पत्र होना चाहिए जो कि उसने आरक्षण कराते समय फार्म में भरा हो। वह भी मूलरूप में हो और उसमें जो नाम हो वही आरक्षण प्रपत्र में होना चाहिए। इनका ध्यानपूर्वक पालन न करने पर आप कठिन समस्या में घिर सकते हैं, अतः पाठक इस बात का ध्यान रखें, एतदर्थ यह लिखा है।

– भवानीदास आर्य, मंत्री न्यास

हलचल

इंजीनियरों ने बनाई पेपर से स्याही हटाने की मशीन
इंजीनियरों ने एक ऐसी लेजर मशीन बनाई है, जो छपे हुए पेपर से स्याही हटाकर उसे फिर से लिखने या छपने लायक बना देगी। इसका नाम 'अनप्रिंट' रखा गया है। यूनिवर्सिटी ऑफ कैंब्रिज की रिसर्च टीम के मुखिया जूलियन ऑलवुड के मुताबिक इस मशीन की अनुमानित कीमत १६.३५ लाख रुपए बताई जा रही है, जो भविष्य में और कम हो सकती है।

इसके फायदे - कागज के लिए हो रही पेड़ों की कटाई रुकेगी, रद्दी कागज की रिसाइक्लिंग से भी सस्ता है, कागज रिसाइकिल करने वाले कैमिकल्स से पर्यावरण को बचाएगी, कार्बन उत्सर्जन को भी ७६ फीसदी कम करेगी।

कैसे करती है काम - यह मशीन लेजर लाइट की कम ताकत की छोटी-छोटी किरणों पर आधारित है। जो पेपर के मूल स्वरूप को छेड़े बिना स्याही को हटा देती है। भविष्य में ऐसे कम्प्यूटर प्रिंटर और फोटो कॉपियर की राह खुल गई है जो अनप्रिंट फंक्शन से लैस होंगे। (-साभार दैनिक भास्कर)

आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय का सम्मान
प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय का आर्य प्रतिनिधि सभा,

मुम्बई की ओर से शॉल, श्रीफल तथा नकद राशि से सम्मान किया गया। एतदर्थ सभा-प्रधान बाबू मिठाईलाल सिंह तथा सभा-मंत्री अरुण अब्रोल साधुवाद के पात्र हैं।

कर्मठ आर्य नेता मा. सोमनाथ जी की सहधर्मिणी श्रीमती विशनदेवी का निधन
६५ वर्ष की अवस्था में हो गया। वे मरणोपरान्त अपने नेत्रदान कर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करके गईं हैं। सत्यार्थ-सन्देश आदरणीय सोमनाथ जी को शोक संवेदना सम्प्रेषित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

श्री दयाराम बसैये को मातृशोक - आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के उपप्रधान श्री दयाराम बसैये की पूज्या माता का देहावसान ८७ वर्ष की आयु में हो गया। सत्यार्थ-सन्देश परिवार की ओर से शोक संवेदना सम्प्रेषित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

प्रतिस्वर

इंटरनेट परआपके द्वारा सम्पादित सत्यार्थ सन्देश का नवीनतम अंक देखा। आर्यजगत् में प्रकाशित दर्जनों पत्रिका देखने को मिल रही हैं, परन्तु सत्यार्थ सन्देश ने अपने जन्म से ही सभी को पीछे छोड़ दिया है। आर्य समाज के लिए शुभ संकेत है बधाई स्वीकार करें।

-मूलचन्द गुप्ता, दिल्ली

आदरणीय प्रिय अशोक जी, " सत्यार्थ-सन्देश का होली का अंक मिला। पढ़कर मन को बहुत ही शान्ति मिली। आपकी पत्रिका जब हाथ में होती है तो उसके दृश्य मात्र से ही आनन्द मिलता है, उसका कागज, उसकी छपाई, उसका मैटर बहुत ही उच्च कोटि का है। उसका मुख्य पृष्ठ अति सुन्दर है। "मातृभूमि पर शीश चढ़ाने ...." आओ स्मरण करें के अन्तर्गत प्रकाशित गीत बहुत ही सुन्दर लगा। मैंने अपने उत्सव में पत्रिका के सदस्य बनने की अपील की है क्योंकि पत्रिका बहुत ही अच्छी लगी।

-आर्य राम अवतार यादव, रुड़की

पत्रिका रुचिकर है, सभी आलेख पठनीय और प्रेरक लगे। आर्य समाज और विवाह आलेख जो आपने लिखा है वह वास्तव में सभी आर्य समाजों को प्रेरित करेगा कि- "विवाह जैसे आत्मीय सम्बन्धों को शुद्ध रखें इसे व्यवसायिक न बनाकर समाजहित उद्देश्य होना चाहिये और यह आलेख वास्तव में मार्गदर्शक है।" पत्रिका में सभी आलेख पठनीय हैं और प्रेरक भी। पत्रिका का स्वरूप और निखरे इसके लिए सत्यार्थ प्रकाश के विचारों से प्रेरित कथा- कहानियाँ और नयी शोध जो हो रही हैं उसकी समीक्षा भी इस पत्रिका में प्रकाशित होनी चाहिए तथा पत्रिका का स्वरूप आर्य समाजों और आर्य परिवारों तक सीमित न रहे इस ओर भी ध्यान दिया जावे ताकि महर्षि दयानन्द के विचार जन व्यापी हो सकें। इसलिए पत्रिका की प्रसार व्यवस्था सबल होनी चाहिए ताकि इसे हिन्दी डायजेस्ट का स्थान प्राप्त हो सके। उज्जैन आर्य समाज की पत्रिका "आर्य संकेत" समाज की आन्तरिक अव्यवस्थाओं के कारण प्रकाशित नहीं हो रही है। ऐसी अव्यवस्थाऐं सर्वविदित हैं, मेरी तो यही कामना है कि विद्वान् संपादक मण्डल के परामर्श और आपके संपादन में पत्रिका जनव्यापी बनेगी। इसी कामना के साथ।

- सुखदेव व्यास, उज्जैन

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) **अवश्य खरीदें।**

प्राप्ति स्थल : श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर - ३१३००१

- अधिकारी वर्ग से विशेष निवेदन-कृपया अपनी संस्था को 'सत्यार्थ-सन्देश' परिवार से अवश्य जोड़े।
- विद्वानों से निवेदन है कि वे केवल सत्यार्थ-सन्देश के लिये लिखे गये अपने संक्षिप्त, सारगर्भित लेख प्रेषित करने की कृपा करें।

व्यंग्य

चमत्कारी जी.बी.रानी

बच्चों को नौजवान बना दे और बूढ़े में कूट-कूट कर भर दे जवानी...... जी हाँ, ये न कोई अंग्रेजी दवा है न फ्रेन्च,न स्पेनिश, न चीनी दवा। न ही किसी पहाड़ की जड़ी बूटी है न ही कोई आयुर्वेदिक या हकीमी नुस्खा। बाबा रामदेव के योग का भी नहीं है इनमें सूत-कपास-चर्खा। ये देश के गरीबों पर हैं बेहद मेहरबान, अमीरों को बिल्कुल ही घास नहीं डालती हैं। ये अद्भुत कद्रदान। माना कि वेदों पुराणों, कुरान, बाइबिल, गुरुग्रन्थ साहिब, अजावेस्ता इत्यादि में नहीं हैं इनके वर्णन की बहार, फिर भी जो पा जाये इनका प्यार उसे तार-तार करके देती हैं उसे तार। चुस्ती, फुर्ती, चैतन्यता, चपलता का देती है ये उसे उपहार।

ये तुम्हारी महान् कृपा है जो मैं बढ़ती उम्र के बावजूद लोगों का दिखता हूँ स्मार्ट, यंग, फुर्तीला, दमदार।

आइये शुरू करता हूँ इनकी रामकहानी। जी.बी. का अर्थ है भारतीय रेल की जनरल बॉगी। जिसमें पन्द्रह बीस बार सफर कर लेने के बाद कोई नहीं रहता है रोगी। या तो रोग चला जाता है या फिर रोगी ही चला जाता है। हमेशा हमेशा के लिए, या तो ए.सी.कम्पार्टमेन्ट जैसे देवताओं के स्वर्ग में अथवा अपेक्षाकृत जनरल बॉगी से कम असुविधाजनक तथाकथित नर्क में ।

ठसाठस भरी हुई चाम्पा चाम्पी से भरपूर जनरल बॉगी। अपने आप में दुनिया की किसी भी जेल से बढ़कर है, किसी भी पुलिस लॉकर में धुनाई के बाद कोई मुजरिम इतना चूर-चूर नहीं होता,जितना जनरल बॉगी के दमघोटू माहौल में लोगों की दुलतियाँ, पँचलतियाँ झेलने वाला इसमें लगातार चालीस घंटे का सफर करने वाला।

पहले एक पैर पर खड़े होकर तपस्या करने वाले लोगों को महान् ऋषि-मुनि मानकर लोग उनका सम्मान करते थे। मगर कैसा घोर कलयुग आ गया है कि पूरा या आधा सफर एक पैर खड़े होकर करने वालों का आजकल कोई नोटिस ही नहीं लेता। महान् तपस्वियों से महान् भयानक भीड़ में दबा सहमा सा इन्सान किसी भी तरह न पानी पीने का इन्तजाम कर सकता है न खाने पीने का न ही ट्रेन के शौचालय में जाने का । वास्तविक जनरल बॉगी में। जिस बॉगी में ये सब दुष्कर कार्य आसान हो उसे मैं किसी भी कीमत पर वास्तविक जनरल बॉगी मानने को तैयार नहीं। वो निश्चित रूप से मुकद्दर का सिकंदर है जो कुली को उसका फिक्सड रेट देकर जी.बी. में बैठने की जगह पा जाता है और वो साक्षात् शहंशाह है जो जी.आर.पी.वालों की मुट्ठी गर्म करके ऊपर सोने का जुगाड़ कर लेता है। वो एक नम्बर का चालबाज व दस नम्बरी का बाप है जो बगैर टिकट के उक्त दोनों में से किसी सुविधा का जुगाड़ कर लेता है। वास्तविक जी.बी. में शातिर से शातिर चोर आपका सामान नहीं उड़ा सकता। चुरा भी ले तो पाँच कदम भी लेकर नहीं जा सकता। कोई आपको जहर खुरानी का शिकार नहीं बना सकता,जिसके पास एक पुड़िया जहर होगा वो खुद खाकर जानलेवा यंत्रणा से मुक्ति चाहेगा या आपको खिलायेगा? कोई भी टी.टी. टिकट चैक करने की हिम्मत नहीं जुटा सकता और न ही कोई चाय वाला,खीरे वाला आप तक पहुँचने की गुस्ताखी कर सकता है।

अब सवाल यह उठता है कि ऐसी तमाम व्यवस्थाओं के बावजूद जी.बी.रानी आपको कैसे बूढ़े से जवान बनाती है? आपको

पूरी तरह स्वस्थ,निरोग,चुस्ती फुर्ती से भरपूर इन्सान बनाती है। अगर भगवान ने आपको मेरे जैसा दिमाग दिया होता,तो मुझे बताने की जरूरत नहीं पड़ती,मगर बताने की महती कृपा कर दे रहा हूँ ताकि नासमझों तक की समझ में आ जाये,सौ टके की सच्ची बात। पुलिस में भर्ती पाने वाले रंगरूटों को रोज सुबह मीलों दौड़ाकर क्यों सताया जाता है? सेना में भर्ती होने वाले जवानों को सौ तरह की बेहद कठिन कसरतों व उछलकूद से क्यों गुजरना पड़ता है। क्रिकेट खेलने वालों को फिटनेस के नाम पर घंटों नेट पर पसीना बहाकर चूर-चूर होने को क्यों विवश किया जाता है? कभी सोचा है आपने? यह सब होता है इन्सान की मांसपेशियों,हड्डियों, धमनियों-शिराओं से हर तरह की जकड़न, सुस्ती, शिथिलताएँ बाहर भगाने के लिए । मेरा तो पक्का दावा है कि पुलिस,सेना व क्रिकेट के अभ्यर्थियों की शारीरिक क्षमता को सेटराइट करने के क्रम में जनरल बॉगी का दुनिया में कोई जवाब नहीं। चूँकि आजकल रामदेव बाबा ने,आसनों व योगी की महिमा को पुनर्जीवित व स्थापित किया है,लिहाजा आसनों के माध्यम से आप सबको बात समझाने की कोशिश करता हूँ -

१. गधासनः- जब आप जी.बी. में खड़े रहते हैं किन्तु मजबूरन आपको अपना सामान अपने कंधों या सिर पर ही रखने की मजबूरी रहती है। इससे आपके कन्धों की मांसपेशियाँ, गर्दन व सिर की हड्डियाँ बेहद मजबूत होती हैं।

२.पंजासनः- जब आपके पंजों पर दर्जनों लोगों के पाँवों का बारी बारी से इतना दबाव पड़े कि आप कराह उठें ,चीत्कार कर उठें। इससे पाँवों के पंजे बिल्ली या शेर के पंजों से ज्यादा मजबूत हो जाते हैं, धीरे-धीरे।

३. एच.पी.कम्प्रेशन आसनः- जब आप जी.बी. के गलियारे में चारों ओर से इतना चम्प जायें कि आपको अपना पोर-पोर टूटता महसूस हो तो सच मानिये आप वही भाग्यशाली हैं जो हजारों रु. बचाते हुए बहुमूल्य मसाज पा रहे हैं। एकदम मुफ्त में पोर-पोर को व फेफड़ों को चुस्त दुरस्त करने वाला आसन।

४.श्वासनः- जब आप कुछ मिनटों के लिए एकदम से श्वाँस लेना ही भूल जायें। इस आसन से आप पानी में कभी भी नहीं डूब सकते,आँसू गैस आप पर असर नहीं करती और युद्ध छिड़ने पर बमों के धुएं आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते क्योंकि श्वाँस रोकने की कला में आपको प्रवीण कर देती है जी.बी.।

५.कपि आसनः- लोगों के सिर पर जबरन बेहयायी से पाँव रखते हुए यदि आप वास्तव में उछलकूद कर शौचालय तक पहुँच जायें तो कपि आसन में दक्ष हो जाते हैं। इससे आप वानर की तरह फुर्तीले हो जाते हैं।

६.पायदान आसनः- लाख प्रयास करके भी जब भयानक भीड़ के चलते बॉगी में न घुस सकें और पूरा सफर पायदान पर ही,भारी सांसत सहते करना पड़े तो समझिये आपके पाँव,हाथ व हाथ के पंजे बेहद मजबूत हो रहे हैं। अंगुलियों में असीम ऊर्जा का समावेश हो रहा है।

स्थानाभाव के कारण एक पदासन, सण्ड्रस्य आसन,शीश झंकृति आसन,मिल्खासन आदि अनेक आसनों की व्याख्या नहीं कर पा रहा हूँ। किन्तु अब तो आपको पक्का यकीन हो ही गया होगा कि कैसे जी.बी.रानी भरती है बूढ़ों में जवानी कूट कूट कर। यदि आप अमीर या मोटापे गठिया इत्यादि के शिकार हों तो कम से कम पच्चीस बार वास्तविक जी.बी. में कम से कम तीन सौ कि.मी.की यात्रा करें व आशातीत लाभ होने पर मुझे धन्यवाद अवश्य दें। खैर मैंने तो कसम खा रखी है जब तक जीऊँगा जी.बी.व सिर्फ जी.बी. में सफर करूँगा व चिर युवा बना रहूँगा। यदि आप यह नहीं कर रहे हैं तो अपने मस्तिष्क की जाँच अवश्य करा लें।

- संदीप कुमार श्रीवास्तव, उत्तरप्रदेश

❑❑❑

न्यास द्वारा समस्त संस्कारों हेतु समुचित व्यवस्था

जीवन में उदात्त नैतिक मूल्य स्वयमेव स्थापित नहीं होते, भागीरथ प्रयत्न करना होता है। भारतीय मनीषा ने इस हेतु १६ संस्कारों का विधान किया है। जो प्रत्येक गृहस्थ को करवाने चाहिए। कई सज्जनों को लगता है कि यह कठिन तथा व्यय-साध्य कार्य है। हमारा निवेदन है कि ऐसा कुछ नहीं है। संस्कार चित्त-प्रसाद-अभिवृद्धि का हेतु है। आप केवल दूरभाष पर अपनी अभिलाषा बतावें। न्यास के पुरोहित पंडित नवनीत आर्य सारा कार्य, स्वतः व्यवस्था कर सुन्दरता से सम्पन्न करायेंगे।

दूरभाष : ०२६४-२४१७६६४, चलभाष ०६३१४५३५३७६

कृपया न्यास की वेबसाईट : www.satyarthprakashnyas.org पर अवश्य देखें

पत्रिका से सम्बन्धित किसी प्रकार की जानकारी/शिकायत के लिये निम्न चलभाष पर सम्पर्क करें।
०६३१४५३५३७६

प्रत्येक माह की 20 तारीख तक भी पत्रिका न मिलने पर कृपया इसी चलभाष पर सम्पर्क करें।

खूब लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी

१९ नवम्बर १८३५ को मोरोपंत व भागीरथीबाई की संतान रूप में एक बालिका ने जन्म लिया। काशी में जन्मी इस बालिका का नाम मणिकर्णिका रखा गया। प्यार से इस बालिका को सभी मनु पुकारने लगे। मोरोपंत जी सतारा जिले के वाई गाँव में चिमाजी आप्पा के यहाँ नौकरी करते थे। चिमाजी आप्पा पूना के पेशवा बाजीराव के भाई थे। सन्१८१८ में अंग्रेजों के पूना कब्जे के पश्चात् बाजीराव पेशवा बिठूर-कानपुर आ गये। चिमाजी आप्पा के देहान्त के पश्चात् मोरोपंत,बाजीराव पेशवा के यहाँ बिठूर आ गये। बाजीराव के दत्तक नानासाहब के साथ मनु ने बचपन में ही शस्त्र विद्या व घुड़सवारी का प्रशिक्षण ले लिया था। बाजीराव मनु को छबीली कहते थे। बाजीराव ने ही आठ वर्षीया मनु का विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव नेवालकर से कराया था। अब मनु झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई हो गई।

गंगाधर राव के पूर्वजों को झाँसी का राज्य महाराजा छत्रसाल से उपहार रूप में प्राप्त हुआ था। सन् १८५१ को सोलह वर्षीया रानी लक्ष्मीबाई को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। कुछ ही दिनों पश्चात् यह नवजात शिशु मृत्यु के आगोश में समा गया। विधाता के इस फैसले को गंगाधर राव सह न सके और वे बीमार पड़ गये। गंगाधर राव ने बीमारी की परिस्थिति को समझकर अपने सम्बन्धी वासुदेवराव के पुत्र आनन्द को गोद लेकर उसका नाम दामोदर राव रख दिया। २१नवम्बर १८५३ को गंगाधर राव का स्वर्गवास हो गया। अंग्रेज तो मानो इस दिन की प्रतीक्षा ही कर रहे थे,उन्होंने दत्तक पुत्र को उत्तराधिकारी रूप में अस्वीकार कर दिया और गंगाधर राव की लाखों की सम्पत्ति को अपने खजाने में जमा कर लिया। ७मार्च,१८५७ को शासन व्यवस्था के लिए अंग्रेज प्रतिनिधि एलिस को नियुक्त करके झाँसी को अंग्रेजी हुकूमत में शामिल कर लिया। अपमानित करते हुए वायसराय डलहौजी ने रानी लक्ष्मीबाई से किला खाली करवा लिया और ५०००रु.मासिक पेंशन बहाल कर दी। रानी को पारम्परिक केशवपन संस्कार के लिए काशी जाने की इजाजत नही दी गई। दामोदर राव के यज्ञोपवीत संस्कार के लिए जमा दस लाख रुपयों में से बड़ी मुश्किल से एक लाख रुपये,एक व्यापारी की जमानत से मिले।

अंग्रेजों के अन्याय-अत्याचार व जुल्म का प्रतिकार लेने के उद्देश्य से रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी युद्ध की तैयारी प्रारम्भ कर दी। स्त्री गुप्तचरों की टोली बना,अंग्रेज छावनियों से गुप्त समाचार लाने की जिम्मेदारी दी। स्त्री-सैनिकों में वृद्धि की। तात्या टोपे ने सम्पूर्ण भारत में चलाई जा रही क्रान्ति की योजनाओं से रानी लक्ष्मीबाई को अवगत कराया। रानी को मानो मन की मुराद मिल गई। ३१मई, १८५७ का दिन स्वतन्त्रता-संग्राम के उद्घोष के लिए निर्धारित किया गया था। परन्तु मेरठ छावनी के ८५ वीरों ने चर्बी वाले कारतूसों के इस्तेमाल से मनाही कर दी। वे जेल में डाल दिये गये थे। १० मई१८५७ को घुड़सवार और पैदल सेना ने जाकर जेल तोड़ दी, अपने साथियों को छुड़ा लिया,अफसरों के घरों को फूँक डाला। जिस यूरोपीय को पकड़ पाये,उसे मार डाला और दिल्ली की ओर चढ़ाई कर दी। यह घटना पूरे भारत में आग की तरह फैल गई। सम्पूर्ण उत्तर-भारत में मई माह में ही क्रान्ति की लपटें अंग्रेजों को दहलाने लगीं।

५जून१८५७ को ईस्ट इण्डिया कम्पनी के स्टार फोर्ट नामक छोटे से किले पर सैनिकों ने हमला कर लूट लिया। झाँसी में अंग्रेज अफसरों के बंगले जला दिये गये। अंग्रेज अपनी स्त्रियों व बच्चों को रानी के पास महल में शरण हेतु लेकर आ गये। धन्य है-वो नारी-वीरांगना,जिसने अंग्रेजों द्वारा अत्याचारित होने के बावजूद राजधर्म व मानवता धर्म का त्याग नहीं किया। बाद में ये अंग्रेज परिवार किले में जा बसे। वहाँ भी भूख-प्यास से तड़पते परिवारों के लिए रानी ने भोजन भिजवाया। किले की लड़ाई में अंग्रेज अधिकारी गार्डन मारा गया तथा रानी के रिसालदार काले खाँ ने किला फतह किया। इसके बाद टीकमगढ़

के दीवान नत्थू खाँ ने अंग्रेजों के इशारे पर बीस हजार सैनिकों के साथ झाँसी पर आक्रमण किया। रानी ने उसे भी परास्त किया । रानी लक्ष्मीबाई ने धैर्य,साहस को संजोकर और न्यायपूर्वक राज्य को चलाना प्रारम्भ किया। सैन्य संगठन को फिर से सुदृढ़ किया। धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की चहल पहल प्रारम्भ हो गई। रानी की सेना में दस हजार बुंदेले,अफगान और असंतुष्ट अंग्रेज थे। चार सौ घुड़सवारों से सुसज्जित सेना के सेनापति जवाहरसिंह बुन्देला तथा दुर्गा दल नामक स्त्री सैन्य दल की प्रमुख वीरांगना झलकारी बाई थीं। गोलंदाज गुलाम गौस के निर्देशन में तोपखाना था,जिसमें महिलाओं को भी तोप चलाने का विशेष प्रशिक्षण दिया गया था। वाणपुर के राजा मर्दन सिंह, शाहगढ़ के बख्तअली ने रानी को पर्याप्त सहायता दी। दस माह बाद ह्यूरोज और बिटलाक ने अंग्रेजी फौज लेकर रायगढ़,चंदेरी,सागर,वाणपुर आदि को जीतते हुए २३मार्च,१८५८ को झाँसी किले को घेर लिया। तात्या टोपे कालपी से रानी की सहायता के लिए निकले परन्तु अंग्रेजों को रानी के गद्दारों से इसकी भनक मिल गई एवं अंग्रेजों ने रास्ते में तात्या टोपे की सेना पर आक्रमण कर दिया। झाँसी किले के चारों प्रवेश दार पर कुशल तोपचियों की तैनाती थी। अंग्रेजों ने ओरक्षा प्रवेश दार पर नियुक्त दुल्हाजू को, पीरबख्श के हाथों रिश्वत देकर,गद्दारी के लिए तैयार कर लिया। उसने अपना प्रवेश द्वार खोल दिया। उन्नाव प्रवेश द्वार पर रानी की प्रिय सहेली तथा दुर्गा दल की प्रमुख झलकारी बाई का पति पूरण सिंह तैनात था। अंग्रेजों ने किले में प्रवेश करते ही उसे मौत के घाट उतार दिया। पति की मृत्यु का शोक करने के बजाए वीरांगना झलकारी बाई ने कूटनीतिक चाल चली। रानी लक्ष्मी बाई को दत्तक पुत्र दामोदर राव के साथ साधारण वेष में बाहर निकाला तथा स्वयं रानी का रूप धारण कर साक्षात चण्डी का अवतार बन गई। झलकारी बाई ने अब अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया था अंग्रेजों को अधिकतम समय तक स्वयं में उलझाये रखना जिससे कि रानी सकुशल कालपी पहुँच जायें। एक बार फिर दुल्हाजू ने गद्दारी की,उसने अंग्रेजों को हकीकत बता दी। अब अंग्रेजों ने रानी का पीछा करना प्रारम्भ किया। झाँसी में पन्द्रह हजार लोगों को अंग्रेजों ने मार डाला। करोड़ों की सम्पत्ति लूटी। सत्रह दिन तक चले इस युद्ध में झाँसी तबाह हो गया।

इधर रानी कालपी पहुँची। वहाँ राव साहब पेशवा और तात्या टोपे ने उनका स्वागत किया। कालपी से ये लोग ग्वालियर आ गये। जनता व सेना ने राव साहब पेशवा का राजतिलक किया तथा रानी युद्ध की तैयारी में आस पास के ठिकानों का भ्रमण करने लगी। ग्वालियर के सिंधिया राजघराने ने अंग्रेजों के आगे घुटने टेक दिये। ह्यूरोज विशाल सेना लेकर ग्वालियर आ धमका। मुरार में उसकी टक्कर तात्या टोपे से हुई। भयंकर युद्ध प्रारम्भ हो चुका था।

१८जून,१८५८ का वो दिन भी आ गया जिस दिन विधाता ने रानी लक्ष्मीबाई की शहादत की तारीख तय कर रखी थी। काशी और सुन्दर नाम की विश्वस्त सहेलियों के साथ रानी चारों तरफ से अंग्रेजों से घिर गईं थीं। रानी की तलवार बाजी से हारकर अंग्रेजों ने तोपों का मुँह खोल दिया। रानी के सैनिक मारे गये,घोड़े की भी एक टांग टूट गई। रानी दूसरे घोड़े पर सवार होकर दोनो हाथों से तलवार चलाती हुई, मुँह में घोड़े की रस्सी दबाये अंग्रेजों को चीरते हुए निकलने में कामयाब हो गईं। रास्ते में बड़ा नाला था, घोड़ा नया होने के कारण बीच में ही फँस गया। अंग्रेजों ने रानी पर गोलियाँ बरसानी प्रारम्भ कर दीं। गोली से घायल रानी के पीछे सिर पर अंग्रेज ने तलवार से वार किया। रानी इस समय कालस्वरूपा हो गईं थीं। बुरी तरह घायल रानी ने दर्जन भर अंग्रेज मार डाले। अंग्रेज पीछे हटे और लड़ते लड़ते रानी लक्ष्मी बाई मातृभूमि की गोद में सदा के लिए सो गईं। आज उनका जीवन संघर्ष,बलिदान गाथा,प्रशासनिक क्षमता प्रेरक है हमारे लिए और उन्हें मातृशक्ति के रूप में हम अपने हृदय में संजोये हुए उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

❑❑❑

अंतराष्ट्रीय बाल दिवस के अवसर पर

बार-बार आती है मुझको मधुर याद बचपन तेरी।
गया ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी ।।
चिंता-रहित खेलना-खाना वह फिरना निर्भय स्वच्छंद।
कैसे भूला जा सकता है बचपन का अतुलित आनंद?
ऊँच-नीच का ज्ञान नहीं था छुआछूत किसने जानी? बनी हुई थी वहाँ झोंपड़ी और चीथड़ों में रानी।।
किए दूध के कुल्ले मैंने चूस अगूँठा सुधा पिया।
किलकारी किल्लोल मचाकर सूना घर आबाद किया।।
रोना और मचल जाना भी क्या आनंद दिखाते थे। बड़े-बड़े मोती-से आँसू जयमाला पहनाते थे।।
मैं रोई, माँ काम छोड़कर आईं, मुझको उठा लिया। झाड़-पोंछ कर चूम-चूम गीले गालों को सुखा दिया।।
दादा ने चंदा दिखलाया नेत्र नीर-युत दमक उठे। धुली हुई मुस्कान देखकर सबके चेहरे चमक उठे।।
वह सुख का साम्राज्य छोडकर मैं मतवाली बड़ी हुई। लुटी हुई, कुछ ठगी हुई-सी दौड़ द्वार पर खड़ी हुई।।
लाजभरी आँखें थीं मेरी मन में उमंग रंगीली थी। तान रसीली थी कानों में चंचल छैल छबीली थी।।
दिल में एक चुभन-सी भी थी यह दुनिया अलबेली थी। मन में एक पहेली थी मैं सब के बीच अकेली थी।।
मिला, खोजती थी जिसको हे बचपन! ठगा दिया तूने। अरे! जवानी के फंदे में मुझको फँसा दिया तूने।।
सब गलियाँ उसकी भी देखीं उसकी खुशियाँ न्यारी हैं। प्यारी, प्रीतम की रँग-रलियों की स्मृतियाँ भी प्यारी हैं।।
माना मैंने युवा काल का जीवन खूब निराला है। आकांक्षा, पुरुषार्थ, ज्ञान का उदय मोहने वाला है।।
किंतु यहाँ झंझट है भारी युद्ध क्षेत्र संसार बना। चिंता के चक्कर में पड़कर जीवन भी है भार बना।।
आ जा बचपन! एक बार फिर दे दे अपनी निर्मल शांति। व्याकुल व्यथा मिटाने वाली वह अपनी प्राकृत विश्रांति।।

❑❑❑

- सुभद्रा कुमारी चौहान

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सन्देश (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सूरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल एवं

स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती
पिण्डवाडा

स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती
सायला गुजरात

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती
दिल्ली

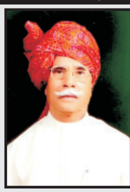

राव हरिचन्द्र राव
नागपुर

श्री दीपचंद आर्य
किरतपुर

श्री रघुनाथ मित्तल
भीलवाड़ा

श्री जयदेव आर्य
भीलवाड़ा

श्री श्रवण कुमार गुप्ता
गुड़गाँव

(स्व.) आचार्य प्रेमभिक्षु
मथुरा
पावन स्मृति में - आभाआर्या (पुत्रवधु)

श्री लक्ष्मण सराफ
भीलवाड़ा

श्री खुशहालचंद्र आर्य
कोलकाता

श्री कृष्ण चौपड़ा
यू.के.

श्री नरेश कुमार राणा
नई दिल्ली

श्रीमती पुष्पा गुप्ता
उदयपुर

श्रीमती शारदा गुप्ता
उदयपुर

(स्व.) पं. पन्नालाल पीयूष
उदयपुर
पावन स्मृति में - सुधाकर पीयूष(पुत्र)

श्री मोती लाल आर्य
आबूरोड़

"सत्यार्थ दूत"
श्रीमती सरोज वर्मा
जयपुर

प्रो. आई. जे. भाटिया
नासिक

श्री राजकुमार गुप्ता एवं श्रीमती सरला गुप्ता
उदयपुर

गुप्त
दान
उदयपुर

आर्य समाज
गाँधीधाम
गुजरात

आर्य परिवार
संस्था
कोटा-राजस्थान

महात्मा सत्यानन्द मुन्जाल
लुधियाना

श्री सत्यानन्द मुंजाल से कौन परिचित नहीं होगा। हीरो साइकिल के मेनेजिंग डायरेक्टर श्री मुजांल का नाम 'गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड' में विश्व की सर्वाधिक साइकिलों के एकल निर्माता के रूप में दर्ज है। आपने लुधियाना में ही १५ आर्यसमाजों की स्थापना की। आपने १९९५ में आर्य कन्या गुरुकुल की स्थापना की जिसे उनका 'ड्रीम चाइल्ड' कहा जा सकता है। सम्पूर्ण परियोजना में आधुनिक शिक्षा पद्धति तथा वैदिक संस्कृति का अद्भुत संगम पाया जाता है। सम्पूर्ण परिवेश महर्षि दयानन्द जी के निर्देशानुसार बाह्य वातावरण से असम्बद्ध है यहाँ तक कि समाचार पत्र तथा टेलीविजन भी नहीं है। परन्तु यहाँ की छात्राऐं आधुनिक शिक्षा में प्रवीण हैं तथा राज्य मैरिट में स्थान पा रही हैं। महात्मा के नाम से जाने, जाने वाले ऐसे महान् व्यक्तित्व का इस न्यास का न्यासी होना हमारे लिए गौरव की बात है।

श्री शुद्धबोध शर्मा, श्री गंगानगर क्षेत्र की आर्य समाजों में जाने-माने व्यक्तित्व हैं। 'यथा नाम तथा गुण' की कहावत को सत्य सिद्ध करते हुए श्री शुद्धबोध जी ने अपने क्षेत्र में आर्य विद्यालय का सफलतापूर्वक संचालन कर, अनेक प्रकल्पों के माध्यम से वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार की धूम मचा दी। आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान में कई महत्वपूर्ण पदों पर कार्यरत् रहें। न्यास के जन्म से ही उनका आशीर्वाद न्यास को प्राप्त है।

हमारे अग्रज तुल्य आदरणीय शुद्धबोध शर्मा के निरामय दीर्घायुष्य हेतु परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

श्री शुद्धबोध शर्मा
श्री गंगानगर

मुस्कराता हरदम
बदले चाहे मौसम
और पनपता और उन्नत
खुशहाल बचपन का कोई
स्वप्न वही मैं देखता हूँ।
यही माता, पिता का कर्त्तव्य कर्म,
परम धर्म और कीर्त्ति का काम है
जो अपने सन्तानों को तन, मन और धन से
विद्या, धर्म, सभ्यता और उत्तमशिक्षायुक्त करना।